महा मृत्युञ्जय मन्त्र
जप विधि
स्तोत्र एवं कवच



महा मृत्युञ्जय मन्त्र जप विधि

स्तोत्र एवं कवच

महामृत्युंजय सहस्रनाम सहित

सम्पादक :

पं. कुलपति मिश्र

मूल्य : २०.००

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

प्रकाशक — **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

वितरक — **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता — **गगन बुक डिपो**
4694, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
फोन : (011) 23950635

सम्पादक : **पं. कुलपति मिश्र**

मुद्रक — **उषा ऑफसेट प्रिंटर्स**, नई दिल्ली-2

MAHA MRITUNJAY MANTRA JAP WIDHI STOTRA AND KAWACH

Editted by : Pt. Kulpati Mishra
Published By : Randhir Prakashan, Hardwar (India)

अनुक्रम

महामृत्युंजय मन्त्रम् (लघु)



ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

महामृत्युंजय मन्त्रम् (बृहद)

ॐ ह्रौं जूँ सः ॐ भूभुर्व स्वः।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं।
उर्वारुकमिव बन्धनांन्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।
ॐ स्वः ॐ भुवः भूः ॐ सः जूँ ह्रौं ॐ।

महामृत्युञ्जय मन्त्र

आगे के पृष्ठों में विभिन्न भाँति की पूजा प्रणाली का प्रस्तुतीकरण किया गया है जो कि महामृत्युञ्जय मन्त्र से संजीवनी के लाभ प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम है। इसी पूजन प्रणाली के बाद प्रयोग समर्पण से पहले साधकगण स्तोत्र कवचादि का पाठ करके समुचित लाभ उठाते हैं परन्तु कभी-कभी यह उपासना काम्य उपासना के रूप में भी की जाती है।

काम्य उपासना में महामृत्युञ्जय मन्त्रों का जपादि किया जाता है। इसमें कौन-कौन से मन्त्र जपे जाते हैं यह तथ्य सर्व साधारण के लिए जान लेना अत्यधिक आवश्यक है अतः ध्यान दें कि—

महामृत्युञ्जय एकाक्षरी मन्त्र 'ह्रौं'।

महामृत्युञ्जय का त्र्यक्षरी मन्त्र 'ॐ जूं सः'।

महामृत्युञ्जय का चतुरक्षरी मन्त्र 'ॐ वं जूं सः'।

महामृत्युञ्जय का नवाक्षरी मन्त्र 'ॐ जूं सः पालय पालय'।

महामृत्युञ्जय का दशाक्षरी मन्त्र **'ॐ जूं सः मां पालय पालय'**। इस मन्त्र का स्वयं के लिए जप इसी भाँति होगा। यदि किसी अन्य व्यक्ति के लिए यह जप किया जा रहा हो तो 'मां' के

स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लें।

महामृत्युञ्जय का पंच दशाक्षरी मंत्र—'**ॐ जूं सः मां (या अमुकं) पालय पालय सः जूं ॐ।**'

महामृत्युञ्जय का द्वात्रिंशाक्षरी मन्त्र वेदोक्त मन्त्र है जो कि निम्नलिखित है—

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्युत्योर्मुक्षीय माऽमृतात॥

उपरोक्त द्वात्रिंशाक्षरी मन्त्र का विचार—

इस मन्त्र में आए प्रत्येक शब्द का स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि शब्द ही मन्त्र है और मन्त्र ही शक्ति है।

इस मन्त्र में से सबसे पहले '**त्र**' शब्द आता है यह शब्द ध्रुव वसु का बोधक है।

इसके बाद '**यम**' शब्द आता है जो कि अध्वर वसु का बोधक है।

इसी भाँति क्रमशः '**ब**' सोम वसु का

'**कम**' वरुण का।

'**य**' वायु का।

'**ज**' अग्नि का।

'**म**' शक्ति का।

'**हे**' प्रभास का।

'**सु**' वीरभद्र का।

'**ग**' शम्भु का।

'**न्धिम**' गिरीश का।

'पु' अजैक का।

'ष्टि' अहिर्बुध्न्य का।

'व' पिनाक का।

'र्ध' भवानी पति का।

'नम' कापाली का।

'उ' दिकपति का।

'र्वा' स्थानु का।

'रु' मर्ग का।

'क' धाता का।

'मि' अर्यमा का।

'व' मित्रऽदित्य का।

'ब' वरुणऽदित्य का।

'न्ध' अंशु का।

'नात' भगऽदित्य का।

'मृ' विवस्वान का।

'त्यो' इन्द्रऽदित्य का।

'मु' पूषऽदिव्य का।

'क्षी' पर्जन्यऽदिव्य का।

'य' त्वष्टा का।

'मा' विष्णुऽदिव्य का।

'मृ' प्रजापति का।

'तात' वषट् का बोधक है।

इस मन्त्र के स्पष्टीकरण में अनेक गूढ़ताएँ हैं क्योंकि यही

वो वेदोक्त महामृत्युञ्जय मन्त्र है जो कि संजीवनी विद्या है।

शब्द ही मन्त्र है और मन्त्र ही शक्ति है। अतः यह जान लेना प्रत्येक तान्त्रिक या तन्त्र को जानने वालों के लिए अत्यधिक आवश्यक है कि यदि शब्द ही मन्त्र है और मन्त्र ही शक्ति है तो गणित के अनुसार—

$$\frac{\text{शब्द}}{\text{मन्त्र}} \times \frac{\text{मन्त्र}}{\text{शक्ति}} = \frac{\text{शब्द}}{\text{शक्ति}}$$

अतः कौन से शब्द की कौन सी शक्ति है?

यहाँ पर मैं इसी द्वात्रिंशाक्षरी वेदोक्त मन्त्र के शब्द की शक्ति का स्पष्टीकरण करता हूँ।

'**त्र**' त्र्यम्बक, त्रि शक्ति तथा त्रिनेत्र का प्रतीक है। यह शब्द तीनों देव अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश की भी शक्ति का प्रतीक है।

'**य**' यम तथा यज्ञ का प्रतीक है।

'**म**' मंगल का द्योतक है।

(यहाँ पर 'य' तथा 'म' को संलग्न करके 'यम' कहे जाने पर मृत्यु के देवता का प्रतीक हो जाता है।)

'**ब**' बालार्क तेज का बोधक है।

'**कं**' काली का कल्याणमयी बीज है। काली का एकाक्षरी बीज 'क्रीं' है और उन्हें 'ककार' सर्वांगी माना जाता है।

'**य**' उपरोक्त वर्णन के अनुसार यम तथा यज्ञ का द्योतक है।

'**जा**' जालंधरेश का बोधक है।

'**म**' महाशक्ति का बोधक है।

'हे' हाकिनी का बोधक है।

'सु' सुप्रभात, सुगन्धि तथा सुर का बोधक है।

'गं' गणपति बीज होने के साथ-साथ ऋद्धि-सिद्धि का दाता भी है।

'ध' धूमावती का बीज है जो कि अलक्ष्मी अर्थात् कंगाली को हटाता है। देह को पुष्ट करता है।

'म' महेश का बोधक है।

'पु' पुण्डरीकाक्ष का बोधक है।

'ष्टि' देह में स्थित षट्कोणों का बोधक है जो कि देह में प्राणों का संचार करते हैं।

'व' वाकिनी का द्योतक है।

'र्ध' धर्म का द्योतक है।

'नं' नंदी का बोधक है।

'उ' उमा रूप में पार्वती का बोधक है।

'र्वा' शिव के बाँये शक्ति का बोधक है।

'रु' रूप तथा आँसू का बोधक है।

'क' कल्याणी का द्योतक है।

'व' वरुण का बोधक है।

'बं' बंदी देवी का द्योतक है।

'ध' धंदा देवी का द्योतक है। इसके कारण देह के विकास समाप्त होते हैं तथा मांस सड़ता नहीं है।

'मृ' मृत्युञ्जय का द्योतक है।

'त्यो' नित्येश का द्योतक है।

'मु' मुक्ति का द्योतक है।

'क्षी' क्षेमंकरी का बोधक है।

'य' पूर्व वर्णित बोधन।

'मा' आने लिए माँग तथा मन्त्रेश का द्योतक है।

'मृ' पूर्व वर्णित।

'तात' चरणों में स्पर्ण का द्योतक है।

यह पूर्ण विवरण **'देवो भूत्वा देवं यजेत'** के अनुसार पूर्णतः सत्य प्रमाणित हुआ है।

इस मन्त्र का ३२ शब्दों का प्रयोग हुआ है और इसी मन्त्र में 'ॐ' लगा देने से ३३ हो जाते हैं। इसे 'त्रयस्त्रिशाक्षरी मन्त्र' कहते हैं। श्री वसिष्ठ जी ने इन ३३ शब्दों के ३३ देवता अर्थात् शक्तियाँ निश्चित की हैं जो कि निम्नलिखित हैं।

इस मन्त्र में **८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, १ प्रजापति तथा १ वषट** को माना है।

महामृत्युञ्जय का तान्त्रिक बीजोक्त मन्त्र निम्नलिखित है—

ॐ भूः ॐ भवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ॥

महामृत्युञ्जय का संजीवनी मन्त्र अर्थात् संजीवनी विद्या निम्नलिखित है।

ॐ ह्रौ जूं सः ॐ भूर्भवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धि पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनांन्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ स्वः ॐ भुवः भूः ॐ सः जूं ह्रौ ॐ॥

महामृत्युञ्जय का एक और प्रभावशाली मन्त्र निम्न है।

ॐ ह्रौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ ह्रौं ॐ॥

अब आप अपनी सुविधा के अनुसार जो भी मन्त्र चाहें चुन लें और नित्य पाठ में या आवश्यकता के समय प्रयोग में लाएँ।

सदा स्मरण रखें कि—जो भी मन्त्र जपना हो उसका जप शुद्ध तथा शुद्धता से करें।

एक निश्चित संख्या में जप करें। पूर्व दिवस में जपे गए मन्त्रों से, आगामी दिनों में कम मन्त्र न जपें। यदि चाहें तो अधिक जप सकते हैं परन्तु स्मरण यही रखना है कि भूतकाल से वर्तमान काल के मन्त्र कम न हो जाएँ।

मन्त्र का उच्चारण होंठों से बाहर नहीं आना चाहिए। यदि अभ्यास न होने के कारण यह विधि न प्रयुक्त हो सके तो धीमे स्वर में जप करें।

जप काल में धूप-दीप जलता रहे।

रुद्राक्ष की माला पर ही जप करें।

माला को गोमुखी में रखें। जब तक पाठ की संख्या पूर्ण न हो, माला को गोमुखी से न निकालें।

जप काल में शिवजी की प्रतिमा, तस्वीर, शिवलिंग या यन्त्र समक्ष रहना अनिवार्य है।

महामृत्युञ्जय के सभी जप कुश के आसन के ऊपर बैठकर

करें।

जिस स्थान पर जपादि का शुभारम्भ हो, वहीं पर आगामी दिनों में भी जप करना चाहिए।

जपकाल में मन को मन्त्र से मिलाएँ।

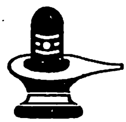
मिथ्या सम्भाषण न करें।

स्त्री सेवन न करें।

आलस्य जम्भाई को यथाशक्ति त्याग दें।

महामृत्युञ्जय मन्त्र के सभी प्रयोग पूर्व दिशा की तरफ मुख करके ही करें।

जप काल में दुग्ध मिले जल से शिवजी का अभिषेक करते रहें या शिवलिंग को चढ़ाते रहें।



महामृत्युञ्जय यन्त्र

"यन्त्रोत्मबिम्बेषु॥"

यन्त्रों में जादुई शक्ति सदा विराजमान रहती है जिसके कारण यन्त्र शीघ्र ही अपने प्रभावों को पूणतः स्पष्ट कर देते हैं।

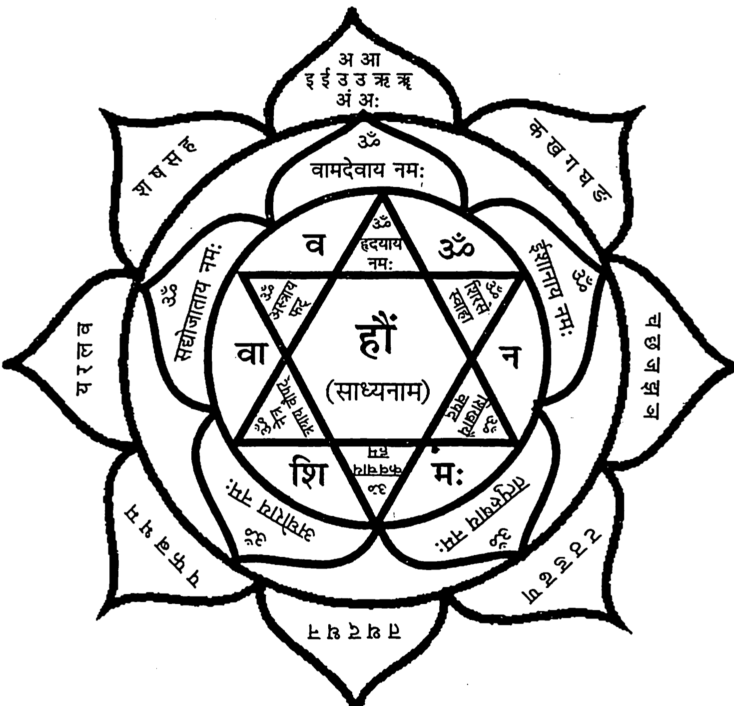
यन्त्र बनाना या इनका लेखन करना एक तान्त्रिक प्रणाली है और इस कार्य को प्रायः तान्त्रिक ही पूर्ण करते हैं।

रेखागणित के प्रमेय, निर्मेय, त्रिकोण, चतुर्भुज आदि जैसी आकृति बनाकर उनमें प्रत्येक स्थान पर बीज मन्त्र या शक्ति संख्या लिखी जाती है। इस भाँति से बनने वाले चित्र को यन्त्र कहा जाता है। यह मान्यता है कि यन्त्र देवता का निवास स्थल होते हैं। अतः प्रत्येक देवता और उसकी शक्ति के अनुसार यन्त्रों का लेखन किया जाता है।

यन्त्र कई भाँति से प्रयोग किए हैं जिनमें से मुख्यतः धारण तथा स्थापन यन्त्र होते हैं।

महामृत्युञ्जयी संजीवनी विद्या के और इनसे सम्बन्ध रखने वाले अनेकानेक यन्त्र पाए जाते हैं। इनमें से कुछ धारण करने के योग्य तथा अन्य यन्त्र पूजन तथा स्थापना करने के योग्य हैं। लेकिन आप पुस्तक में प्रस्तुत किए गए—इस यन्त्र को किसी शुभ समय पर या ग्रहण काल में भोजपत्र के ऊपर रक्त चन्दन की

स्याही तथा बेल की लेखनी से लिखकर धूप-दीप करके धारण कर लें तो समस्त रोगों का नाश हो जाता है और कुटुम्ब में भी सुख शान्ति रहती है।



महामृत्युञ्जय यन्त्र

नोट : महामृत्युंजय के अन्य यन्त्रों का उल्लेख भी प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है लेकिन उक्त यन्त्र सर्वाधिक प्रभावशाली और विद्वानों द्वारा मान्य है।

महामृत्युञ्जय के उपयोगी विषय

महामृत्युञ्जय के प्रयोग निम्न कार्यों में अधिक उपयोगी हैं—

१. जन्मकुंडली, लग्नकुंडली, वर्षकुंडली, गोचरकुंडली, दशा, महादशा, अन्तर्दशा, स्थूलदशा, सूक्ष्मदशा में होने वाले सूर्यादि नवग्रहों द्वारा शरीर पीड़ा हो।

२. महामारी आदि का प्रकोप हो।

३. इष्ट-मित्रों से वियोग की सम्भावना हो या हो गया हो, भाई-बन्धु से विद्रोह हो। दोषारोपण या कलंकित हो, चित्त उद्विग्न हो, द्रव्य नष्ट होता हो, रोग दीर्घकाल से पिंड न छोड़ता हो।

४. विवाह-मेलापक में नाड़ी आदि दोष हों, षडाष्टक दोष हों।

५. राजभय, चोरभय, परमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्र भय हो।

६. मन धर्म से विचलित हो, अशान्ति हो।

७. त्रिदोष, दुर्निवार्य रोग, ज्वरपीड़ा, दुःस्वप्न होते हों। आदि कारणों में महामृत्युञ्जय जप करे या ब्राह्मण से करावें।

कार्यानुसार जपसंख्या

किसी प्रकार से महामारी, जैसे—हैजा, प्लेग, शीतला या

अन्य प्रकार के महा उपद्रवों की शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय का **एक करोड़ जप** कराना चाहिए। जब सामान्य रोग हो, दुःस्वप्न होते हों, पुत्र प्राप्ति के लिए, स्त्री-प्राप्ति के लिए, पति-प्राप्ति के लिए, ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए, मान-सम्मान प्राप्ति के लिए, इष्ट सिद्धि या मन शान्ति के लिए **सवालाख जप** करना चाहिए। अपमृत्यु का भय हो, संदिग्धावस्था, भय की आशंका, कलंकित अवस्था में दस हजार जप कराना चाहिए। यात्रा आदि में भय उपस्थित हो तो **एक हजार जप** कराना चाहिए। यात्रा आदि में भय उपस्थित हो तो भी **एक हजार जप** कराना चाहिए।

जप के लिए विशेष

यः शास्त्रविधि मृत्सृज्य वर्तते काम कारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगितम्॥

इस महावाक्यानुसार शास्त्र की विधि के अनुसार पूजन-अर्चन करना चाहिए। मनमानी ढंग से करना या कराना हानिप्रद होता है।

प्रयोग कराने के समय शुभ मुहुर्त, चन्द्र-तारा आदि बलों को दिखाकर तब अनुष्ठान-पुनश्चरण प्रयोग कराना चाहिए। प्रयोग कराते समय शिव-मन्दिर देवालय, सिद्धस्थान, नदीतट, बिल्व, अश्वत्थवृक्ष के स्थान पर सफाई कराकर लीप-पोतकर अनुष्ठान आरम्भ करें।

देवालय, सिद्धस्थान, शिवमन्दिर में तो पार्थिवेश्वर की आवश्यकता नहीं है—किन्तु और सभी स्थानों पर पार्थिवेश्वर शिवलिंग निर्माण करके ही महामृत्युञ्जय आदि का जप विधान

सहित करना कराना चाहिए।

ब्राह्मण द्वारा करावें तो प्रयोगविधि के ज्ञाता, उदार, दयालु, परोपकारी, सन्तोषी, देवाराधक जितेन्द्रिय, विषम संख्यात्मक ब्राह्मण होने चाहिए। यजमान भी शुद्धचित्त, शान्त, विश्वास रखने वाला, संयमी, जब तक अनुष्ठान होता रहे जितेन्द्रिय होकर रहे।

प्रयोग पुरश्चरणात्मक हो तो प्रतिदिन की संख्या समान होनी चाहिए, किसी दिन जप अधिक किसी दिन कम नहीं होना चाहिए—इसी प्रकार ब्राह्मण भी प्रतिदिन उतनी ही संख्या में रहें जितनों ने प्रथमदिन पुरश्चरण प्रारम्भ किया हो, इसमें उलट-फेर-कमी-बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण होने पर अर्थात् पुरश्चरण समाप्ति पर जितना जप हुआ हो उसका दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश या कार्यानुसार न्यूनाधिक रूप में ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए।

यदि पुरश्चरण एक ही दिन का हो, हवन करने में कठिनाई हो, हवन न हो सके तो दशांश जप अधिक कराना चाहिए। श्रद्धा-भक्ति-विश्वास के साथ इस कार्य को करने से सर्वदा सफलता ही मिलती है।

विधर्मियों के संसर्ग से विधर्मी भाषा का पठन-पाठन करने से नास्तिकता की वृद्धि हो गई है और इन्हीं कारणों से मनुष्य सदनुष्ठान से विचलित हैं और श्रद्धा-भक्ति व विश्वासहीन रहते हैं। जिन कारणों से उनको फल मिलना तो दुर्लभ हो जाता है किन्तु उनके कटुवचनों से और भी आपत्तियों का सामना करना

पड़ता है। अतः जप में पूर्ण विश्वास रखना ही सर्वोत्तम है।

होम के लिए

आहुति के अनुसार-वेदी (स्थंडिल) बनावे उस पर कुशकण्डिका, क्रमानुसार अग्निस्थापन कर शास्त्रोक्त विधि से यथाशक्ति यथोचित द्रव्यों से हवन कराना चाहिए, हवन सामग्री सामान्यतया यव चावल, तिल-घी, खांड़ और मेवा यही प्रधान हैं। परन्तु कामना विशेष हो और हवनद्रव्य सवा लक्ष्य जप हो तो—बिल्वफल, तिल, खीर, पीलीसरसों, दूध-दही, दूब से आहुति दें। बड़, पलास, खैर की लकड़ी-मधु (शहद) में डुबोकर आहुति दें। रोगशान्ति के लिए—शत्रु से विजय प्राप्ति के लिए, धन-सम्पत्ति और पुत्र-कलत्र पौत्रादि की दीर्घायु कामना के लिए गुरुच का ४-४ अंगुल का टुकड़ा लेकर उसी का हवन करावे। लक्ष्मी प्राप्ति के लिए बिल्वफल का हवन करावे। ब्रह्मत्वसिद्धि के लिए पलाश की समिधा का हवन घृत सहित करावे। धन की प्राप्ति के लिए, वट की लकड़ी का हवन, शोभावृद्धि के लिए तिलों की आहुति, शत्रुनाशार्थ सरसों की आहुति दे। यशस्वी बनने के लिए खीर की आहुति करावे। कृत्या (पिशाच बाधा) का नाश कराने के लिए, मृत्यु भय दूर करने के लिए, दही से आहुति करावे, रोगक्षय की कामना के लिए ३-३ दूर्वा से आहुति दे। ज्वरशान्ति के लिए, अपामार्ग की लकड़ी और खीर की आहुति दे। अपने वश में करना हो तो गाय के दूध-घी से दुर्गा की आहुति देवे, सर्व रोगों की शान्ति के लिए, काश्मरी की ३-३ समिधा तथा दूध और चावल की आहुति दिलावे। मन्त्रोच्चारण के साथ अन्त

में स्वाहा शब्द उच्चारण करके आहुति देवें। हवन समाप्ति के बाद अर्घ्य पात्र में या और पात्र में जल-दूध मिश्रित रखकर अन्जली से तर्पण करें और उसी प्रकार तर्पण समाप्त होने पर दूर्बाकुरों से अपने ऊपर या यजमान के ऊपर मार्जन करें।

सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए मनः संकल्प या यजमान द्वारा संकल्प लेकर तब कार्य की सिद्धि के लिए अनुष्ठान में लगना चाहिए।

संकल्प—**ॐ तत्सदद्यैतस्य, महामांगल्यप्रद मासोत्तमे मासे, अमुक मासे, अमुकपक्षे अमुक तिथौ. अमुकवासरे, अमुक गोत्रोत्पन्नोहं-अमुकशर्माहं ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराण तन्त्रोक्त फलप्राप्तये मम जन्मवर्ष-मास-दिनगोचराष्टकऽवर्गदशान्तर्शादिषु ये अनिष्ट फलकारकाः ग्रहास्तेषामनुकूलतासिद्धयर्थ सकल-आधि-व्याधि-प्रशमनपूर्वक दीर्घायुर्विपुल-बल पुष्टि नैरुज्यादि सकलाभीष्टसिद्धये श्रीमन्महामृत्युंजय प्रीत्यर्थ यथा (शत-सहस्र-अयुत-लक्षादि) संख्याक श्रीमन्महामृत्युञ्जय मन्त्र जप महंकरिष्ये। (अथवा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये)**

(वा-विषूचिकादि जनमारोपसर्ग शांत्यर्थवा-वृष्टिकामार्थ वा अमुकाभियोग निवृत्यर्थ। वा दुःस्वप्न निरसनार्थं। वा-निर्विघ्न दिग्यात्रा सिद्धयर्थ प्रति सम्मुख शुक्रदोष दूरी करणार्थ। वा काकमैथुन दर्शनादि सूचित सर्वारिष्ट निवृत्यर्थं। वा पल्लीपतन-सरटारोहण अमुक दृष्टांग स्फुरण जनित-अशुभफल विनाशार्थं। वा-दीर्घायुः पुत्र प्राप्त्यर्थं। यथेच्छ धन लाभार्थं। अमुक कामना सिद्धयर्थं

अमुकसंख्या परिमितं श्री महामृत्युञ्जयमन्त्र जपमहं करिष्ये)। (वा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये।)

पार्थिवपूजा विधिः

आचम्य-प्राणनायम्य, देशकालौसंकीर्त्य—

आचमन प्राणयाम करके संकल्प करें—

***संकल्प*—अत्राद्य महामांगल्यप्रद मासोत्तमे मासे अमुकपक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे, अमुक गोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहं अमुक कामोहं श्री पार्थिवेश्वर शिवलिंग पूजनमहं करिष्ये।**

विभूति रुद्राक्ष धारणं कृत्वा—(भस्म और रुद्राक्ष माला धारण करें)।

***भूमि प्रार्थना*—सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपं मृत्तिकामिमाम्। ग्रहीष्यामि प्रसन्ना त्वं लिङ्गार्थं भव सुप्रभे॥ ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः॥**

***मृत्तिका ग्रहण मन्त्रः*—ॐ हराय नमः (शुचिस्थानाद् मृदमाहृत्य)।**

***मृत्तिका में जल छोड़ने का मन्त्र*—बं इत्यमृतवीजाभि मन्त्रित जलप्रक्षेपेण संपीड्य।**

***शिवलिंग बनाने का मन्त्र*—ॐ महेश्वरायनमः इति लिंग कृत्वा। स्वपुरतः**

***लिंग स्थापन करें*—ॐ शूल पाणये नमः इति पीठादौ प्रतिष्ठाप्य-प्राणानायम्य।**

विनियोग जल से छोड़े—

ॐ अस्य श्री शिव पंचाक्षर मंत्रस्य वामदेव ऋषिरनष्टुप् छंदः श्री सदाशिवो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवाय कीलकं मम सांबसदाशिव प्रीत्यर्थे न्यासे-पूजने जपे विनियोगः।

न्यास मन्त्रः—ॐ वामदेव ऋषयेनमः सिरसि, ॐ अनुष्टुप् छंदसे नमः मुखे। ॐ श्री सांब सदाशिव देवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। ॐ शक्तये नमः पादयोः। ॐ शिवाय कीलकाय नमः सर्वांगे।

ॐ नं तत्पुरुषाय नमो हृदये। ॐ मं अघोराय नमः पादयोः। ॐ शिं सद्यो जाताय नमो गुह्ये। ॐ वां वामदेवाय नमो मूर्ध्नि। ॐ यं ईशानायनमो मुखे।

ॐ ॐ अंगुष्ठाय नमः। ॐ नं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ मं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ शिं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ यं करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्।

ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ नं शिर से स्वाहा। ॐ मं शिखायै वषट्। ॐ शिं कवचाय हुं। ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं राजतिगिरि निभं चारुचन्द्रा वतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्र कृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववंद्यं निखिल भयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

इतिध्यात्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्॥

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र—ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि क्रिया मय शरीरम्, प्राणाख्या देवता, आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, देव प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरशि। ऋग्यजुः सामच्छन्दसेभ्यो नमो मुखे। प्राणाख्या देवतायै नमो हृदि। आं बीजाय नमो गुह्ये। ह्रीं शक्तयः नमः पादयोः। क्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। इति कृत्वा—ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं हं सः शिवस्य प्राणा इह प्राणाः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः शिवस्य जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि। ॐ वाङ्मनस्त्वकचक्षुः क्षोत्र जिह्वा घ्राण पाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा शिवलिङ्ग स्पृशन्।

(प्राणप्रतिष्ठा करके शिवलिंग स्पर्श करें आह्वान करें)।

ॐ भूः पुरुषं सांब सदाशिव मावाहयामि ॐ भुवः पुरुषं सांब सदाशिव मावाहयामि। ॐ स्वः पुरुषं सांब सदाशिव मावाहयामि। (इत्यावाह्य)

संक्षिप्त पूजनम्—ॐ पिनाकधारिणे नमः इति स्नानम्। ॐ शिवय नमः इति गन्धं, अक्षतं, बिल्वपत्रं-पुष्पं-धूप-दीप-नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ पशुपतये नमः नीराजनं समर्पयामि। ॐ महादेवाय नमः इति संहार मुद्रया विसर्जनम्।

विशेष—इस प्रकार प्रतिदिन पार्थिव पूजन करना चाहिए—यदि साथ में जप भी करते हों तो प्रथम जप करके तब संहारमुद्रा से शिवलिंग का विसर्जन कराना चाहिए।

शिवपूजा विधि

शिव मन्दिर में जप करना हो या रुद्राभिषेक करना हो या सहस्रघटाभिषेक करना हो तो शिव मूर्ति का पूजन क्रम इस प्रकार करते हैं—

शिवालये, देवालये वा पार्थिवेश्वर शिव सन्निधौ उपविश्य पूजनसामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य। आचम्य-प्राणानायम्य-देशकालौ संकीर्त्य-अमुक गोत्रोत्पन्नोऽमुक शर्मा अमुक कामोऽहं शिव पूजां करिष्ये। तत्रादौ गणेश गौर्यादिनां नाममन्त्रेण सम्पूजनं शिवपूजनं च कुर्यात्।

शिवालय, देवालय वा पार्थिवेश्वर शिवलिंग के समीप बैठकर पूजन सामग्री का सम्प्रोक्षण करके आचमन-प्राणायम करें—संकल्प पढ़ें। गणेश-गौरी का नाममन्त्र से पूजन करके शिवलिंग का पूजन करें।

पूजा उपचार क्रम

१. अष्टात्रिंशद उपचाराः

अर्घ्यं पाद्यमाचमनीयं मधुपर्कमुपस्पृशम्।
स्नानं नीराजनं वस्त्रमाचामनं चोपवीतकम्॥ १॥
पुनराचमनं भूषा दर्पणालोकनं ततः।
गन्ध पुष्पे धूप दीपौ नैवेद्यं च ततः क्रमात्॥ २॥

पानीयं तोय माचामः हस्तवासस्ततः परम्।
ताम्बूलमनुलेपं च पुष्पदानं ततः पुनः॥ ३॥
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं स्तुतिश्चैव प्रदक्षिणा।
पुष्पांजलि नमस्कारवष्टात्रिंशत्समोरितः॥ ४॥

क्वचित् त्रयोविंशत्युपचाराः

अत्रएता एव गृहीता। परञ्चैताः पूजाः षोडशांग न्यासपूर्विका ग्राह्यः।

पूजायां ग्राह्य पुष्पादीनिः

समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत्।
पूजायां पंचरात्रं स्या दशरात्रं च विल्वकम्॥ १॥
एकादशाहं तुलसी नैव पर्य्युषिताभवेत्।
जाती शमी कुशा कङ्गुमल्लिकाकरवीरकम्॥ २॥
चम्पकं-वकुलं चैव पद्म विल्वं पवित्रिकम्।
एतानि सर्व देवानां संग्राह्याणि समानि च॥ ३॥

२. षोडशोपचार क्रमः

आसनं स्वागतंचार्घ्या पाद्यमाचमनीयकम्।
मधुपर्कार्पणं स्नानं वसनाभरणानि च॥ १॥
सुगन्धः सुमनो धूपो दीपो नैवेद्य एव च।
माल्यानुलेपने चैव नमस्कारा विसर्जनम्॥ २॥

नागदेव क्रमः

आवाहनासने पाद्यमर्घ्यामाचमनीयकम्।
स्नानं वस्त्रोपवीते च गन्धमाल्यादिभिःक्रमात्॥ १॥
धूप दीपं च नैवेद्यं नमस्कारं प्रदक्षिणम्।
उद्वासनं षोडशकमेवं देवार्चने विधिः॥ २॥

३. दशोपचार क्रमः

अर्घ्यं पाद्यंचाचमीनीयं स्नानं वस्त्र निवेदनम्।
गन्धादयो नैवेद्यान्ता उपचारा दशक्रमात्॥ १॥

४. पंचोपचार क्रमः (जाबालिः)

ध्यानमावाहनं चैव भक्त्या यच्च निवेदनम्।
नीराजनं प्रणामश्च पंचपूजोपचारकः॥ २॥
(अन्यच्च) गन्धपुष्पे धूप दीपौ नैवेद्यं इति च क्रमात्॥ २॥

पाद्यम्

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथोयेऽअस्य सत्वानो हंतेभ्योऽकर नमः॥
ॐ शिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि॥

अर्घ्यम्

ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह।
बृहत्युष्णीहा ककुप्सूचीभिः सम्यन्तुत्वा॥
ॐ शिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि॥

आचमनम्

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगधिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्व्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात्॥
ॐ शिवाय नमः आचनमं समर्पयामि॥

स्नानम्

ॐ वरुणस्योतम्भनमसि वरुणस्य
स्कम्भसर्जनीस्थो वरणस्यऽऋतसदन्यसि।
वरुणस्यऽऋऽत सदनमसि वरुणस्यऋतसदनमासीद॥

ॐ शिवाय नमः जलस्नानं समर्पयामि॥

दुग्धस्नानम्

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्त रिक्षेपयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥
ॐ शिवाय नमः पयःस्नानं समर्पयामि॥

दधिस्नानम्

ॐ दधिक्राब्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयू ಠಿं षितारिषत॥
ॐ शिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि॥

घृतस्नानम्

ॐ घृतङ्घृतपावानः पिबतव्वसांव्वसा पावानः।
पिबतानारिक्षस्य हवि रसि स्वाहा॥
दिशः प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा।
ॐ शिवाय नमः घृतस्नानम् समर्पयामि॥

मधुस्नानम्

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्त मुतोषेसोमधुमत्पार्थिव ಠಿं रजः। मधुद्यौ रस्तुनः पिता॥
मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावोभवन्तुनः।
ॐ शिवाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि॥

शर्करास्नानम्

ॐ अपा ಠಿं रस मुद्वयस ಠಿं सूर्ये सन्त ಠಿं समाहितम।
अपाठ्ःरसस्य योरसस्तम्बोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो-
सीन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥

ॐ शिवाय नमः शर्करास्नानं समर्पयामि ॥

पंचामृतस्नानम्

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित्॥
ॐ शिवाय नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि॥

शुद्धोदकस्नानम्

ॐ शुद्धबालः सर्व्वशुद्धबालो मणि बालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः॥
ॐ शिवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रोपवस्त्रम्

ॐ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्।
याश्चते हस्तऽइषवः पराता भगवो वपः॥
ॐ शिवाय नमः वस्त्रोपवस्त्रंसमर्पयामि॥

यज्ञोपवीतम्

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचौव्वेनऽआवः।
सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः॥
ॐ शिवाय नमः यज्ञोपवीतम् समर्पयामि॥

गन्धम्

ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो
भवाय च रुद्राय च नमः कपर्दिने।
ॐ शिवाय नमः गन्धं समर्पयामि॥

अक्षतम्

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
ॐ शिवाय नमः अक्षतान समर्पयामि॥

पुष्पमालां

ॐ नमः पार्याय चा वार्य्याय च नमः प्रतरणाय चांत्तरणाय च नमस्तीर्घ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च नमः।
ॐ शिवाय नमः पुष्पमालां-पुष्पंसमर्पयामि॥

विल्वपत्रम्

ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च बरूथिने च नमः।
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्या च नमो धृष्णवे॥
ॐ शिवाय नमः विल्वपत्रम् समर्पयामि॥

धूपम्

ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते चे नमो ह्रस्वाय।
ॐ शिवाय नमः धूपं समर्पयामि॥

दीपम्

ॐ नमः आशवे चाजिराय च नमः शीघ्रयाय च शीम्याय च नमः ऊर्म्याय चा वसवन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च।
ॐ शिवाय नमः दीपं दर्शयामि॥

नैवेद्यम्

ॐ नमो ज्येष्ठाय च नमः पूर्वजाय चा परजाय च नमो मध्यमाय चा प्रगल्भाय च नमो जघन्याय च सोम्याय च।

ॐ शिवाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि॥

आचमनम्

ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
ॐ शिवाय नमः आचमनं समर्पयामि॥

ताम्बूलम्

ॐ इमारुद्राय तव से कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः।
यथा नः शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टम् ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥
ॐ शिवाय नमः तांबूलम् समर्पयामि॥

दक्षिणां

ॐ हिरणयगर्भः समवर्तताग्रेभूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्या मुते मां कस्मै देवाय हाविषा विधेम॥
ॐ शिवाय नमः द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि॥

शिव नीराजन (आरती)

ॐ जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीशा।
त्वं मां पालयं नित्यं कृपया जगदीशा॥
हर हर हर महादेव॥ १॥

कैलासे गिरि शिखरे कल्पद्रुम विपिने।
गुंजति मधुकरपुंजे कुंज वने गहने॥
कोकिल कंजित खेलत हंसावन ललिता।
रचयति कला कलापं नृत्यसि मद सहिता॥
हर हर हर महादेव॥ २॥

तस्मिन् ललित सुदर्शन शाला मणि रचिता।

तन्मध्ये हर निकटे गौरीमुदसहिता॥
क्रीडां रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुरसेवित नामयते शीशम्॥
हर हर हर महादेव॥ ३॥

कर्पूरद्युति गौरं पंचानन सहितम्।
त्रिनयन शशिधर मौलिं विषधर कण्ठयुतम्॥
सुन्दर जटाकलापं पावकयुतभालं।
डमरू त्रिशूल पिनाकं करधृत नृकपालम्॥
हर हर हर महादेव॥ ४॥

मुण्डै रचयति मालां पन्नग उपवीतं।
वाम विभागे गिरिजा रूपं अतिललितं॥
सुन्दर सकल शरीरे कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वज रूपं तापत्रय हरणम्॥
हर हर हर महादेव॥ ५॥

ॐ शिवाय नमः नीराजनं समर्पयामि॥

पुष्पांजलिम् हस्ते फल पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा
ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्या सत्।
तेहना कं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।
ॐ शिवाय नमः मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि॥

प्रदक्षिणा

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषगिणः।
तेषा ఠ सहस्त्र योजनेबधन्वानि तन्मसि॥ (वैदिक)
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।

तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

क्षमा प्रार्थना

करचरण कृतं वाक्कायजं कर्म जं वा।
श्रवण नयन जं वा मानसं वाऽपराधम्॥
विहितमविहितं वा सर्वमेतत क्षमस्वे।
जय जय करुणाब्धे! श्रीमहादेव! शम्भो॥
ॐ शिवाय नमः क्षमा प्रार्थना समर्पयामि।

इस प्रकार पार्थिवेश्वर शिव पूजन की क्रिया भगवान् शिव की प्रसन्नता के लिए उन्हें समर्पण करता हूँ।

महामृत्युञ्जय जप विधि

कृत नित्यक्रियो जपकर्ता स्वासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य धृत रुद्राक्षभस्मत्रिपुण्डः आचम्य। प्राणानायम्य।

जप करने वाला अपने आसन पर पूर्वमुख वा उत्तर मुख करके भस्म का त्रिपुंड्र लगाकर रुद्राक्ष माला धारण करके बैठे। आचमन प्राणायाम करें।

संकल्प— ॐ विष्णुः ३ श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्यः श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयेपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वतेवाराह कल्पे वैवस्तमन्वन्तरे अष्टामविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे-विक्रमशके वौद्धावतारे अमुकऋतौ अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ अमुकवासरे, अमुक करणे, अमुक राशि स्थिते सूर्ये अमुकराशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशि स्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहग्रण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुक शर्मा (वर्मा, गुप्तः दासो) हं मम जन्मलग्नाच्चन्द्रलग्नाद् वर्ष मास दिन गोचराष्टक वर्ग दशान्तर्दशादिषु चतुर्थाऽष्टमद्वादशस्थान् स्थित क्रूरग्रहास्तेषां अनिष्टफल शान्ति पूर्वकं

द्वितीयसप्तमएकादशस्थानस्थित सकल शुभफल प्राप्त्यर्थ श्री महामृत्युञ्जय रुद्रदेवता प्रीत्यर्थ यथा (शत सहस्त्र अयुत लक्ष कोटयादि) संख्याक श्री मन्महामृत्युञ्जय मन्त्र जप महं करिष्ये (वा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये)।

विनियोग—हाथ में जल लेकर पढ़ कर छोड़ें।

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्री त्र्यम्बकरुद्रो देवता, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, मम अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—ॐ वसिष्ठऋषयेनमः शिरसि। अनुष्टुप्छंदसे नमो मुखे॥ श्रींत्रयम्बकरुद्रदेवतायै नमो हृदि। श्रीं बीजायनमो गृह्ये॥ ह्रींशक्तये नमः पादयोः। इति ऋष्यादिन्यासः॥

अथकरन्यासः—ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्रायशूलपाणये स्वाहा-अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रौं ऊं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्र शिरसे जटिने स्वाहा-मध्यमाभ्यां वषट्॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साम मन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय

अग्नित्रयायज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अधीरास्त्राय करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। इति करन्यासः॥

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्रौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बक ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा। हृदयाय नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवाय। शिरसे स्वाहा ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा॥ शिखायै वषट्॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भुर्भूवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रां कवचाय हुं॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ ह्रौं ॐ जू सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष-रक्ष अघोरास्त्राय फट्॥ (इति हृदयादिन्यासः)

अक्षरन्यासः—त्र्यं नमः दक्षिण चरणाग्रे। बं नमः। कं नमः, यं नमः, जां नमः दक्षिण चरण सन्धि चतुष्केषु। मं नमः वाम चरणाग्रे। हें नमः, सुं नम, नमः, गं नमः, धिं नमः, वाम चरण सन्धिचतुष्केषु। पुं नमः गुह्ये। ष्टिं नमः, आधारे। वं नमः जठरे। र्द्ध नमः हृदये। नं नमः कण्ठे। ॐ नमः दक्षिणकराग्रे। वां नमः। रूं नमः। कं नमः। मिं नमःदक्षिणकरसन्धि चतुष्केषु। वं नमः वामकराग्रे। बं नमः, धं नमः नां नमः मृं नमः वामकरसन्धि चतुष्केषु। त्यों नमः वदने। मुं नमः, ओष्ठयोः। क्षीं नमः घ्राणयोः। यं नमः दृशोः।

मां नमः श्रवणयोः। मृं नमः भ्रुवोः। तां नमः शिरसि। (इति अक्षरन्यासः)

अथ पदन्यासः—ॐ त्र्यम्बकं शिरसि। यजामहे भ्रुवोः। सुगन्धिं दृशोः। पुष्टिवर्धनं मुखे। उर्वारुकं कण्ठे। मिवं हृदये। बन्धनात् उदरे। मृत्योः गुह्ये। मुक्षीय ऊर्वोः। मां जाह्नवोः। अमृतात् पादयोः। (इतिपदन्यासः)

अथ ध्यानम्

चन्द्रोद्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद,
हस्ताब्जेन दधत्सु दिव्य ममलं हास्यास्य पङ्केरुहम्।
सूर्येन्द्वाग्नि विलोचनं करतले पाशाऽक्षसूत्रांकुशां,
भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरे॥ १॥

अर्थ—अपने दोनों हाथों में धारण किए दोनों कुम्भों से निकलते जल से अपने मस्तक का सिंचन करते हुए अपनी गोद के दोनों हाथों पर कलश लिए एक हाथ से स्फटिक माला, दूसरे हाथ में मृग, तीसरे हाथ में कमल धारण एवं मस्तक पर चन्द्र से अमृत बहते अपने शरीर का अमृत से सिंचन करते त्रिनेत्रधारी शिव गिरिजा सहित श्रीमृत्युञ्जय भगवान् की आराधना करता हूँ।

इति ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य। ध्यान कर मानसोपचार पूजन करे।

गन्धं—ॐ लं पृथिव्यात्मकं समर्पयामि।

धूपं—ॐ हं आकाशात्मक धूपं समर्पयामि।

दीपं—ॐ रं तेजोरूपं दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यं—ॐ वं अमृतात्मक नैवेद्यं समर्पयामि।

मन्त्रपुष्पांजलिः—ॐ सं सर्वात्मकं, मंत्रपुष्पांजलि समर्पयामि।

श्री महामृत्युञ्जय जप-मन्त्र

ॐह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। भूर्भुवःस्वरोम जूं सः ह्रौं ॐ॥

एतद् यथासंख्यं जपित्वा पुनर्न्यास कृत्वा जपं भगवन्तमहामृत्युञ्जय देवतायै समर्पयेत्॥

इस मन्त्र का यथा संख्या जप करे पुनः न्यास करे और जप भगवान्मृत्यञ्जय रुद्र देवता के दक्षिण हस्त में समर्पण करें।

प्रार्थना—**गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणामत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु ये देव त्वत्प्रसादान्महेश्वरः॥**

क्षमाप्रार्थना—**करचरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवण नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विहितविहितं वा सर्व मेतत् क्षमस्व। जय जय करुणाब्धे! श्रीमहादेव! शम्भो!**

अनेन श्री महामृत्युञ्जय जपाख्येन कर्मणा भगवान् श्री महामृत्युञ्जय साम्बसदाशिवः प्रीयतां नमम—(से जल छोड़ें)।

अनेन जप सांगता सिध्यर्थ यथा कामनाद्रव्येण महामृत्यंजय मंत्रेण जपदशांश हवनं, तद्दशांश तर्पणं, तद्दशांश मार्जनं, तद्दशांश ब्राह्मण भोजनं च करिष्ये।

॥ महामृत्युञ्जय जपविधान समाप्त॥

महामृत्युञ्जय कवचम्

महामृत्युंजय कवच (१)

भैरव उवाच

शृणुष्व परमेशानिं कवचं मन्मुखोदितम्।
महामृत्युञ्जयस्यास्य न देवं परमाद्भुतम्॥ १॥

श्री भैरव जी ने कहा—हे महेश्वरि! इस परम् ऐश्वर्यवान् कवच को मेरे मुख से सुनो। इस अद्भुत महामृत्युञ्जय कवच को किसी को न दे।

यं धृत्वा च पठित्वा च यं श्रुत्वा कवचोत्तमम्।
त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितोऽस्मि महेश्वरि॥ २॥

इस उत्तम कवच को जो धारण करे, पढ़े या सुनेगा वह त्रैलोक्य का मालिक होकर सुख से रहेगा।

तदेव वर्णयिष्यामि तव प्रीत्या वरानने।
तथापि परमं तत्त्वं न दातव्यं दुरात्मने॥ ३॥

हे वरानने! उसका वर्णन तुम्हारी प्रीति देखकर करता हूँ। यह परम तत्व है किसी भी दुरात्मा को नहीं देना बताना चाहिए।

विनियोग पढ़कर जल गिरावे—

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय रुद्रो देवता॥ ॐ बीजं, जूं शक्तिः, सः कीलकम हौमिति तत्त्वं श्री चतुर्वर्ग फल साधनार्थ

पाठे विनियोगः॥

ध्यानं

चन्द्र मण्डल मध्यस्थे रुद्र माले विचित्रिते।
तत्रस्थं चिन्तयेत्साध्यं मृत्युंमाप्नोति जीविति॥१॥

चन्द्रमण्डल मध्य में धारण किए हुए विचित्र माला धारण किए रुद्र का जो चिन्तन करता है उसे मृत्यु प्राप्त होने पर भी जीवन मिल जाता है।

ॐ जूं सः शिरः पातु देवो मृत्युञ्जयोमम।
श्री शिवो वै ललाटं च ॐ ह्रौं भ्रुवौ सदाशिवः॥२॥

ॐ जूं सः ह्रौं बीजरूपी शिव शिर में निवास करें श्री शिव ललाट में, ॐ सदाशिव भौंः में।

नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्दीमेवताच्छ्रुती।
त्रिलोचनोऽवताद्गण्डौ नासा में त्रिपुरान्तकः॥३॥

नीलकण्ठ नेत्रों में, कपर्दी कानों में। गण्डस्थ में त्रिलोचन, नासा में त्रिपुरांतक।

मुखं पीयूपघट् भृदोष्ठौ में कृतिकाम्बरः।
हनुं में हाटकेशानो मुखं बटुकभैरवः॥४॥

मुख में अमृतघट रूपी शिव, ओष्ठों में कृत्तिकाम्बर। ठोड़ी में हाटकेश्वर, मुख में बटुक भैरवः।

कन्धरां कालमथनो गलं गणप्रियोऽवतु।
स्कंन्धौ स्कंदपितापातु हस्तौ में गिरिशोवतु॥५॥

कन्धे में कालमथन, गले में गणप्रिय। स्कंधप्रदेश में स्कंदपिता, हाथ में गिरीश।

नखान्मे गिरिजानाथः पायादङ्गुलि संयुतान्।
स्तनौ तारापतिः पातु वक्षः पशुपतिर्मम॥६॥

पादो की संयुक्त अंगुलिसहित नखों में गिरिजानाथ। स्तनों में तारापति, वक्षस्थल में पशुपति।

कुक्षिं कुबेरवदः पार्श्वौ मे मारशासनः।
शर्व पातु तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममावतु॥७॥

कुक्षि में वर देने वाले कुबेर, पार्श्व मंडल में मारशासन। नाभि स्थान में शर्व, पृष्ठ स्थान में शूली।

शिश्नं में शंकरः पातु गुह्यं गुह्यकवल्लभः।
कटिं कालान्तक पायाद् उरुमेंधकघातनः॥८॥

लिंग स्थान में शंकर, गुदा स्थान में गुह्यकबल्लभ। कटि में कालान्तक, ऊरू में अंधक घात।

जागरूकोऽवताज्जानू जङ्घे मे कालभैरवः।
गुल्फौ पायाज्जदाधारी-पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु॥९॥

जानु में जागरूक, जंघाओं में कालभैरव। गुल्फ स्थान में जटाधारी, पादस्थान में मृत्युञ्जय।

पादादि मूर्द्धापर्यन्तं सद्योजातो ममावतु।
रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पात्वमृतेश्वरः॥१०॥

पाद से मूर्द्धा पर्यन्त सद्योजात। रक्षाहीन, नामहीन शरीर का अमृतेश्वर।

पूर्वे बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः।
पश्चिमे पार्वतीनाथ उत्तरे मां मनोन्मनः॥११॥

पूर्वे बलविकरण, दक्षिणे कालशासन, पश्चिम में पार्वती

नाथ, उत्तर में मनोन्मन।

ऐशान्यामीश्वरं पायादाग्नेयामग्निलोचनः।
नैऋत्यां शंभुरव्यान्मां वायव्यां वायुवाहनः॥१२॥

ऐशान्य दिशा में ईश्वर। आग्नेय में अग्निलोचन। नैऋत्य में शंभु। वायव्य में वायुवाहन।

ऊर्ध्वे बलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः।
दश दिक्षु सदा पातु महामृत्युञ्ज़यश्चमाम्॥१३॥

ऊर्ध्व स्थान का बलप्रमथन, पाताल का परमेश्वर, दशो दिशाओं की रक्षा महामृत्युञ्जय करें।

रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राणसंशये।
पायादों जूं महारुद्रो देवदेवो दशाक्षर॥१४॥

रणे-राजकुल में, जूवा, विषम समय, प्राणसंकट के समय। ॐ जूं महारूद्रो देवदेवो दशक्षर रूप रक्षा करें।

प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्यान्हे भैरवोऽवतु।
सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्यचेतनः॥१५॥

प्रभात समय ब्रह्मा, मध्याह्न में भैरव, सायंकाल सर्वेश्वर, रात्रिकाल में नित्यचेतन रूप रक्षा करें।

अर्द्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोदयः।
सर्वदा सर्वतः पातु ॐ जूं सः ह्रौं मृत्युञ्जयः॥१६॥

अर्धरात्रि में महादेव, निशा के अन्त में महोदय। सर्वदा सब स्थानों में ॐ जूं सः ह्रौं यह मृत्युञ्जय मन्त्रात्मक देव रक्षा करें।

इतीदं कवचं पुणयं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।
सर्वमंत्रमयं गुह्यं सर्वतंत्रेषु गोपितम्॥१७॥

यह तीनों लोकों में पुण्यप्रद दुर्लभ मृत्युञ्जय कवच सर्वमन्त्रमय गुप्त से भी गुप्त तीनों लोकों में हैं।

पुण्यं पुणयप्रदं दिव्यं देवदेवाधिदैवतम्।
य इदं च पठेन्मंत्र कवचं वाचयेत्ततः॥१८॥

यह पुण्य से भी पुण्यप्रद दिव्य देवो में देवाधिपति मृत्युञ्जय का मन्त्र कवच का पाठ करें।

तस्य हस्ते महादेवि त्र्यंबकस्याष्टसिद्धयः।
रणे धृत्वा चरेद्युद्धं हत्वाशत्रूं जयं लभेत्॥१९॥

उसके हाथ में हे महादेवि! त्र्यंबक की अष्टसिद्धि प्राप्त होती है। युद्ध में धारण करने से, युद्ध में विचरता हुआ शत्रुओं का नाश करके जय प्राप्त करता है।

जपं कृत्वा गृहे देवि स प्राप्स्याति सुखं पुनः।
महाभये महारोगे महामारीभये तथा॥२०॥

जय प्राप्त करके, गृह में पुनः सुख जिस प्रकार मिलता है। महाभय, महारोग, महामारी भय से।

दुर्भिक्षे शत्रु संहारे पठेत्कवचमादरात्।
सर्वं तत्प्रशमं याति मृत्युञ्जय प्रसादतः॥२१॥

दुर्भिक्ष, शत्रुसंहार के समय इस कवच का आदर-सम्मान के साथ पाठ करें।

धनं पुत्रान्सुखं लक्ष्मींमारोग्यं सर्वसम्पदः।
प्राप्नोति साधकः सद्यो देवि सत्यं न संशयः॥२२॥

धन-पुत्र-सुख, लक्ष्मी सुख, आरोग्य सुख सर्व सम्पत्ति का सुख साधक को प्राप्त होता रहता है यह कवच सदैव-सर्वत्र

फलकारी है इसमें संशय नहीं है।

इतीदं कवचं पुण्यं महामृत्युञ्जयस्य तु।
गोप्यं सिद्धिप्रदं गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्॥२३॥

यह महापुण्यकारी गुप्त सिद्धिप्रद गोपनीय महामृत्युञ्जय कवच उस तरह से गुप्त रखने योग्य है जिस तरह अपनी योनि को गुप्त रखा जाता है।

महामृत्युंजय कवच (२)

श्रीदेव्युवाच

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सृष्टिस्थितिलयात्मक।
मृत्युंजयस्य देवस्य कवचं में प्रकाशय॥

श्री ईश्वर उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम्।
मार्कण्डेयोऽपि यद्धृत्वा चिरंजीवी व्यजायत॥
तथैव सर्वदिक्पाला अमरावमवाप्नुयुः।
कवचस्य ऋषिर्ब्रह्मा छन्दोऽनुष्टुबुदाहतन्॥
मृत्युंजयः समुद्दिष्टो देवता पार्वतीपतिः।
देहारोग्यदलायुष्ट्वे विनियोगः प्रकीर्तितः॥
ॐ त्र्यम्बकं मे शिरः पातु ललाटं मे यजामहे।
सुगन्धिं पातु हृदयं जठरं पुष्टिवर्धनम्॥
नाभिमुर्वारुकमिव पातु मां पार्वतीपतिः।
बन्धनादूरुयुग्मं मे पातु वामाङ्गशासनः॥
मत्योर्जानुयुगं पातु दक्षयज्ञविनाशनः।
जंघायुग्मं च मुक्षीय पातु मां चन्द्रशेखरः॥

मामृताच्च पदद्वन्द्वं पातु सर्वेश्वरो हरः।
प्रसौ मे श्रीशिवः पातु नीलकण्ठश्च पार्श्वयोः॥
ऊर्ध्वमेव सदा पातु सोमसूर्याग्निलोचनः।
अधः पातु सदा शम्भुः सर्वापद्विनिवारणः॥
वारुण्यामर्धनारीशो वायव्यां पातु शंकरः।
कपर्दो पातु कौवेर्यामैशान्यां ईश्वरोऽवत्॥
ईशानः सलिले पायदघोरः पातु कानने।
अन्तरिक्षे वामदेवः पायात्तत्पुरुषो भुवि॥
श्रीकण्ठः शयने पातु भोजने नीललोहितः।
गमने त्र्यम्बकः पातु सर्वकार्येषु भुवतः॥
सर्वत्र सर्वदेहं मे सदा मृत्युंजयोऽवतु।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वकामदम्॥
सर्वरक्षाकरं सर्वग्रहपीड़ा-निवारणम्।
दुःस्वप्ननाशनं पुण्यमायुरारोग्यदायकम्॥
त्रिसंध्यं यः पठेदेतन्मृत्युतस्य न विद्यते।
लिखितं भूर्जपत्रे तु य इदं मे व्यधारयेत्॥
तं दृष्टैव पलायन्ते भूतप्रेतपिशाचकाः।
डाकिन्यश्चैव योगिन्यः सिद्धगन्धर्वराक्षसः॥
बालग्रहादिदोषा हि नश्यन्ति तस्य दर्शनात्।
उपग्रहाश्चैव मारीभयं चौराभिचारिणः॥
इदं कवचमायुष्यं कथितं तव सुन्दरि।
न दातव्यं प्रयत्नेन न प्रकाश्यं कदाचन्॥

महामृत्युञ्जय स्तोत्र

महामृत्युंजय स्तोत्र (१)

इस स्तोत्र के जाप से आई हुई मृत्यु भी जप के समाप्त होने तक ठहर जाती है। इस स्तोत्र के पाठ से अकाल मृत्यु के कारण भी समाप्त हो जाते हैं तथा जपकर्त्ता पूर्ण आयु को प्राप्त करता है। इस अद्‌भुत प्रभावशाली पाठ द्वारा स्वप्न के अशुभ फल भी शुभ फलों के दाता हो जाते हैं। जपकर्त्ता के ऊपर किया हुआ कोई मारण प्रयोग असफल हो जाता है। इस स्तोत्र को पंचमी, दशमी तथा पूर्णिमा के दिन जपने से रोगों का अन्त हो जाता है।

नन्दिकेश्वर उवाच

कैलासस्योत्तरे शृङ्गे शुद्ध-स्फटिक-सन्निभे।
तमोगुणविहीने तु जरा-मृत्यु-विवर्जिते॥ १ ॥
सर्वार्थसम्पदाधारे सर्वज्ञानकृतालये।
कृताञ्जलिपुटो ब्रह्मा ध्यानासीनं सदाशिवम्॥ २ ॥
प्रपच्छ प्रणतो भूत्वा जानुभ्यामवनिं गतः।
सर्वार्थसम्पदाधारो ब्रह्मलोक-पितामहः॥ ३ ॥

नन्दिकेश्वर बोले कि कैलाश पर्वत के ऊपरी चोटी पर शुद्ध स्फटिक तुल्य सत्व, रजगुण से युक्त वृद्धावस्था और मृत्युजित। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय के आधार, समस्तज्ञान के

पाशाभयभुजः सर्वरत्नाकरनिषेवितः।
वरुणात्मा महादेवः पश्चिमे मां सदाऽवतु॥ ८॥
गदाभयकरः प्राणनायकः सर्वदागतिः।
वायव्यां मारुतात्मा मां शंकरः पातु सर्वदा॥ ९॥
शङ्खाभयकरस्थो मां नायकः परमेश्वरः।
सर्वात्मान्तरदिग्भागे पातु मां शंकरः प्रभुः॥ १०॥
शूलाभयकरः सर्वविद्यानामधिनायकः।
ईशानात्मा तथैशान्यां पातु मां परमेश्वरः॥ ११॥
ऊर्ध्वभागे ब्रह्मरूपी विश्वात्माऽधः सदाऽवतु।
शिरो मे शंकरः पातुः ललाटं चन्द्रशेखरः॥ १२॥
भ्रूमध्यं सर्वलोकेशस्त्रिनेत्रो लोचनेऽवतु।
भ्रूयुग्मं गिरिशः पातु कर्णौ पातु महेश्वरः॥ १३॥
नासिकां मे महादेव ओष्ठौ पातु वृषध्वजः।
जिह्वां मे दक्षिणमूर्तिर्दन्तानमे गिरिशोऽवतु॥ १४॥
मृत्युंजयो मुखं पातु कण्ठं मे नागभूषणः।
पिनाकी मत्करौ पातु त्रिशूली हृदयं मम॥ १५॥
पञ्चवक्त्रः स्तनौ पातु उदरं जगदीश्वरः।
नाभिं पातु विरूपाक्षः पार्श्वौं मे पार्वतीपतिः॥ १६॥
कटिद्वयं गिरिशो मे पृष्ठं मे प्रमथाधिपः।
गुह्यं महेश्वरः पातु ममोरू पातु भैरवः॥ १७॥
जानुनी मे जगद्धर्ता जंघे मे जगदम्बिका।
पादौ मे सततं पातु लोकवन्द्यः सदाशिवः॥ १८॥

गिरिशः पातु मे भार्यां भवः पातु सुतान्मम।
मृत्युंजयो ममायुष्यं चित्तं मे गणनायकः॥ १९॥
सर्वाङ्गं मे सदा पातु कालकालः सदाशिवः।
एतत्ते कवचं पुण्यं देवतानां च दुर्लभम्॥ २०॥
मृतसंजीवनं नाम्नां महादेवेन कीर्तितम्।
सहस्रावर्तनं चास्य पुरश्चरणमीरितम्॥ २१॥
यः पठेच्छ्रणुयान्नित्यं श्रावयेत्सुसमाहितः।
स कालमृत्युं निर्जित्यं सदायुष्यं समश्नुते॥ २२॥
हस्तेन वा यदा स्पृष्टवा मृतं संजीवयत्यसौ।
आधयो व्याधयस्तस्य न भवन्ति कदाचन॥ २३॥
कालमृत्यमपि प्राप्तमसौ जयति सर्वदा।
अणिमादिगुणैश्वर्यं लभते मानवोत्तमः॥ २४॥
शुद्धारम्भे पठित्वेदमष्टाविंशतिवारकम्।
युद्धमध्ये स्थितः शत्रुः सद्यः सर्वैर्न दृश्यते॥ २५॥
न ब्रह्मादीनि चास्त्राणि क्षयं कुर्वन्ति यस्य वै।
विजयं लभते देवयुद्धमध्येऽपि सर्वदा॥ २६॥
प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत्कवचं शुभम्।
अक्षय्यं लभते सौख्यमिह लोके परत्र च॥ २७॥
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः।
अजरामरणो भूत्वा सदा षोडषवार्षिकः॥ २८॥
विचरत्यखिलाँल्लोकान्प्राप्य भोगांश्च दुर्लभान्।
तस्मादिदं महागोप्यं कवचं समुदाहृतम्॥ २९॥
मृतसंजीवनं नाम्ना दैवतैरपिदुर्लभम्॥ ३०॥

मृत संजीवनी कवच

जब मृत देह को अधिक काल तक सुरक्षित रखना हो, जब भी कोई देह त्याग करने लगे अर्थात प्राणान्त के समय संजीवनी कवच का पाठ अति उत्तम है।

एवमाराध्य गौरीशं देवं मृत्युं जयेश्वरम्।
मृतसंजीवनं नाम्नां कवचं प्रजपेत्सदा॥ १॥
सारात्सारतरं पुण्यं गुह्याद् गुह्यतरं शुभम्।
महादेवस्य कवचं मृतसंजीवनामकम्॥ २॥
समाहितमना भूत्वा शृणुष्व कवचं शुभम्।
श्रुत्वैतद्दिव्यकवचं रहस्यं कुरु सर्वदा॥ ३॥
वराभयकरो यज्वा सर्वदेवनिषेवितः।
मृत्युंजयो महादेवः प्राच्यां मां पातु सर्वदा॥ ४॥
दधानः शक्तिमभयां त्रिमुखः षड्भुजः प्रभुः।
सदाशिवोऽग्निरूपी मामाग्नेय्यां पातु सर्वदा॥ ५॥
अष्टादशभुजोपेतो दण्डाभयकरो विभुः।
यमरूपी महादेवो दक्षिणस्यां सदाऽवतु॥ ६॥
खड्गाभयकरो धीरो रक्षोगणनिषेवितः।
रक्षोरूपी महेशो मां नैर्ऋत्यां सर्वदाऽवतु॥ ७॥

भण्डार—श्री शिव जी महाराज ध्यानमुद्रा में बैठे हुए हैं—उनमें नम्रभाव से दोनों हाथों से प्रणाम करते हुए ब्रह्मा जी ने साष्टांग दण्डवत किया और पूछा—

ब्रह्म उवाच

केनोपायेन देवेश! चिरायुर्लोमशोऽभवत्।
तन्मे ब्रूहि महेशान! लोकानां हितकाम्यया॥४॥

ब्रह्मा बोले कि हे देवों के देव महादेव जी लोमश ऋषि को दीर्घजीवन कैसे प्राप्त हुआ इसे संसार के हित के लिए कहने की कृपा करें।

सदाशिव उवाच

शृणु ब्रह्मन्! प्रवक्ष्यामि चिरायुर्मुनिसत्तमः।
सञ्जातः कर्मणा येन व्याधि-मृत्यु-विवर्जितः॥५॥

महादेव जी ने उत्तर दिया, हे ब्रह्मा जिसके करने से लोमश मुनि दीर्घजीवी हुए उसे कहता हूँ आप सुनें।

तस्मिन्नेकार्णवे घोरे सलिलौघ-परिप्लुते।
कृतान्तभय-नाशाय स्तुतो मृत्युञ्जयः शिवः॥६॥

लोमश ऋषि ने, अगाध और अथाह समुद्र में कण्ठ तक जल में खड़े होकर भय के नाश के लिए श्री मृत्युञ्जय महादेव की स्तुति की।

तस्य सङ्कीर्त्तनान्नित्यं मुनिर्मृत्युविवार्जितः।
त्वमेव कीर्तयन् ब्रह्मन्! मृत्युञ्जेतुं न संशयः॥७॥

उन मृत्युञ्जय शिव भगवान् की स्तुति से ही यमराज का भय छूट गया और मृत्यु को जीत लिया, हे ब्राह्मण मृत्युञ्जय की

अराधना मृत्यु को जीतती है।

लोमश उवाच

देवाधिदेव! देवेश! सर्वप्राणभृताम्बर!
प्राणिनामपि नाथस्त्वं मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥८॥

लोमश ऋषि ने कहा, हे देवों के देव महादेव! सर्वप्राणियों के प्राण और उनके नाथ श्री मृत्युञ्जय आपको मेरा नमस्कार है।

देहिनां जीवभूतोऽसि जीवो जीवस्य कारणम्।
जगतां रक्षकस्त्वं वै मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥९॥

हे देव! समस्त प्राणियों के उत्पत्ति, स्थिति एवं संहारक एकमात्र आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आपको प्रणाम है।

हेमाद्रिशिखराकारं सुधाविचि मनोहरम्।
पुण्डरीकपरंज्योतिर्मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥१०॥

हे देव! आप हिम के उन्नत शिखर के आकार वाले हैं। अमृत तरंगों के समान सुन्दर वर्ण वाले आप ही हैं एवं श्वेत कमल की शुभ्रज्योति रूप श्वेतांग आप ही हैं। मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

ध्यानाधारं महाज्ञानं सर्वज्ञानैककारणम्।
परित्राणासि लोकानां मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥११॥

योगियों के ध्यान के आधार महाज्ञानी, समस्त ज्ञान के कारण, त्रिलोकी की रक्षा करने वाले आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

निहता येन कालेन स देवाऽसुर-मानुषाः।
गन्धर्वाऽप्सरसश्चैव सिद्धविद्याधरास्तथा॥१२॥

देव, असुर, मनुष्य, गन्धर्व, अप्सरा, सिद्ध, विद्याधर।

साध्याश्च वसवो रुद्रास्तथाऽश्विनिसुतावुभौ।
मरुतश्च दिशो नागाः स्थावरा जङ्गमास्तथा॥१३॥

साध्यदेव, अष्टवसु, रुद्र (एकादशरुद्र) अश्विनि कुमार के दोनों पुत्र, मरुत (वायु), दस दिशायें, पर्वत, स्थावर एवं जंगम।

जितःसोऽपि त्वया ध्यायन् मृत्युञ्जय! नमोऽस्तुते॥१४॥

आदि ने आपकी ही कृपा से मृत्यु पर विजय प्राप्त की। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

ये ध्यायन्ति परां मूर्तिं पूजयन्त्यमरादयः।
न ते मृत्युवशं यान्ति मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥१५॥

समस्त देवादि गण आपकी परम मूर्ति का ध्यान करके मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

त्वमोङ्कारोऽसि वेदानां देवानां च सदा शिवः।
आधारशक्तिः शक्तीनां मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥१६॥

वेदों में ॐकार रूप आप ही हो, देवों में आपका सदाशिव रूप, और सम्पूर्ण शक्तियों के आधार आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

स्थावरे जङ्गमे वाऽपि यावत्तिष्ठति देहगः।
जीवत्यपत्यलोकोऽयं मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥१७॥

देह धरने वाले, चराचर अपना जीवन आपकी ही कृपा से धरते हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

सोम-सूर्याऽग्नि-मध्यस्थ व्योमव्यापिन् सदाशिवः।
कालत्रय महाकाल मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥१८॥

चन्द्र सूर्य और अग्नि के मध्य स्थित रहने वाले आकाश के सदृश व्यापक रूप वाले, हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

प्रबुद्धे चाऽप्रबुद्धे च त्वमेव सृजसज्जगत्।
सृष्टिरूपेण देवेश मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥१९॥

जाग्रत, सुषुप्तावस्था में जगत् की सृष्टि करने वाले सृष्टि रूप आप ही हो। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

व्योम्नि त्वं व्योमरूपोऽसि तेजः सर्वत्र तेजसि।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपोऽसि मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥२०॥

आकाश रूप में आकाश में, तेजरूप से तेज में, ज्ञानरूप से ज्ञानियों के मध्य आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

जगज्जीवो जगत्प्राणः स्त्रष्टा त्वं जगतः प्रभुः।
कारणं सर्वतीर्थानां मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥२१॥

समस्त संसार में जीव एवं प्राण स्वरूप आप ही हैं। जगत् की सृष्टि करने वाले आप ही हैं। सभी तीर्थों के कारण रूप आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

नेता त्वमिन्द्रियाणां च सर्वज्ञानप्रबोधकः।
साङ्ख्ययोगश्च मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥२२॥

सभी इन्द्रियों के नियन्ता, समस्त ज्ञान के दाता, सांख्य, योग और हंस श्रेष्ठ आप हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

रूपातीतः सुरूपश्च पिण्डस्थपदमेव च।
चतुर्योगकलाधार! मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥२३॥

रूपातीत, सुन्दरस्वरूप, पिण्ड और चारों योग रूपी कलाओं के आधार आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

रेचके वह्निरूपोऽसि सोमरूपोऽसि पूरके।
कुम्भके शिवरूपोऽसि मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥ २४॥

प्राणायाम में—रेचक में वह्नि रूप, पूरक में सोम रूप, कुम्भक में शिव रूप आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

क्षयं करोषि पापानां पुण्यानामपि वर्द्धनम्।
हेतुस्त्वं श्रेयसां नित्यं मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥ २५॥

पापों के क्षयकर्त्ता—पुण्यों की वृद्धि कारक, श्रेय, ऐश्वर्यादि के कारण आप ही हैं। हे महामृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

सर्वमायाकलातीत! सर्वेन्द्रियपरावर!
सर्वेन्द्रियकलाधीश! मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥ २६॥

सब माया में अतीत कला रूप, इन्द्रियों में सर्वश्रेष्ठ, सर्व इन्द्रियों की कला के स्वामी आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

रूपं गन्धो रसः स्पर्शः शब्दः संस्कार एव च।
त्वत्तः प्रकाश एतेषां मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥ २७॥

हे देव! आप से ही रूप, रस, गन्ध, स्पर्श शब्द और संस्कार प्रकाशमान होते हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

चतुर्विधानां सृष्टीनां हेतुस्त्वं कारणेश्वर!
भावाऽभावपरिच्छिन्न मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥ २८॥

हे कारणेश्वर! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चतुर्विध सृष्टि की उत्पत्ति के कारण भाव (नाम ६) अभाव (नाम १) सब सात होते हैं उनमें भी आप ही उपस्थित हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

त्वमेको निष्कलो लोके सकले भुवनत्रये।
अतिसूक्ष्मातिरूपस्त्वं मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥२९॥

आप अकेले ही तीनों लोकों में व्याप्त हैं। आपका स्वरूप अत्यन्त सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

त्वं प्रबोधस्त्वमाधारस्त्वद्बीजं भुवनत्रयम्।
सत्त्वं रजस्तमस्त्वं हि मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥३०॥

आप ज्ञान के रूप में त्रिलोकी को उद्बोधन करते हैं। आधार देते हैं और बीज रूप मन्त्र हैं। आप ही का स्वरूप सत्व-रज-तम है। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

त्वं सोमस्त्वं दिनेशश्च त्वमात्मा प्रकृतेः परः।
अष्टात्रिंशत्कलानाथ मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥३१॥

आप सोम (चन्द्र) दिनेश (सूर्य) और प्रकृति के आत्मा स्वरूप हो और अड़तीस कलाओं के अधिपति हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

सर्वेन्द्रियाणमाधारः सर्वभूतगुणाश्रयः।
सर्वज्ञानमयानन्तः। मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥३२॥

सब प्राणियों की इन्द्रियों के आधार (रक्षक) सब प्राणियों में गुण के दाता समस्त अनन्त ज्ञान के भण्डार हैं। हे मृत्युंजय आपको नमस्कार है।

त्वमात्मा सर्वभूतानां गणानां त्वमधीश्वरः।
सर्वानन्दमयाधार! मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥३३॥

प्राणियों की आत्मा, गुणों के ईश्वर, सब आनन्दों के आधार आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आप को नमस्कार है।

त्वं यज्ञः सर्वयज्ञानां त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणम्।
शब्दब्रह्मत्वमोङ्कार! मृत्युञ्जय! नमोऽस्तु ते॥ ३४॥

यज्ञो में यज्ञरूप, ज्ञान स्वरूप ज्ञान में, ॐकार रूप शब्द में आप ही हैं। हे मृत्युञ्जय आपको नमस्कार है।

फलश्रुति

सदाशिव उवाच

एवं सङ्कीर्त्तयेद् यस्तु शुचिस्तद्गतमानसः।
भक्त्या श‍ृणोति यो ब्रह्मन् न स मृत्युवशो भवेत्॥ ३५॥

महादेव ने कहा, हे ब्रह्मा जो-जो शुद्धमन भक्ति के साथ इस स्तोत्र का पाठ करें या श्रवण करे तो वह मृत्यु को जीत लेता है। मृत्यु के वश नहीं रहता।

न च मृत्युभयं यस्य प्राप्तकालं च लङ्घयेत्।
अपमृत्युभयं तस्य प्रणश्यति न संशयः॥ ३६॥

उस साधक को मृत्युभय नहीं रहता। इस श्लोक का पाठ करने से अपमृत्यु का भय भी दूर होता है, इसमें संशय नहीं है।

व्याधयो नोपपद्यन्ते नोपसर्गभय भवेत्।
प्रत्यासन्नतरे काले शतैकावर्तने कृते॥ ३७॥

सौ पाठ करने से सभी व्यधियों, महामारियों का भय नहीं होता है।

मृत्युर्नजायते तस्य रोगान् मुञ्चति निश्चितम्।
पञ्चम्यां वा दशम्यां वा पौर्णमास्यामथाऽपि वा॥ ३८॥

मृत्यु का भय नहीं होता, रोग का भी भय कभी नहीं होता यदि पंचमी, दशमी पूर्णिमा को भी इसका सौ पाठ करते हैं।

शतमावार्तयेद् यस्तु शतवर्ष स जीवति।
तेजस्वी बलसम्पन्नो लभते श्रियमुत्तमाम्॥३९॥

वह सौ वर्ष तक निश्चित जीवित रहते हैं, तेजस्वी बल से सम्पन्न और श्रीमान रहते हैं।

त्रिविधं नाशयेत् पापं मनोवाक्-कायसम्भवम्।
अभिचारणि कर्माणि कर्माण्याथर्वणानि च।
क्षीयन्ते नाऽत्र सन्देहो दुःस्वप्नं च विनश्यति॥४०॥

इस स्तोत्र का पाठ मन वाणी शरीर के त्रिविध ताप रूपी जो पाप हैं उनका नाश करता है अभिचार-दुःस्वप्न आदि सब नष्ट होते हैं, इसमें सन्देह नहीं है।

इदं रहस्यं परमं देवदेवस्य शूलिनः।
दुःस्वप्ननाशनं पुण्यं सर्वविघ्नविनाशनम्॥४१॥

यह देवाधिदेव महादेव का अत्यन्त गुप्त रहस्य है। इसके पाठ करने से सुनने से सभी प्रकार के दुःख-दुःस्वप्न का नाश-सर्वविघ्नों का नाश होता है। और पुण्य की वृद्धि होती है।

卐 卐

महामृत्युंजय स्तोत्र (२)

स्तोत्र के द्वारा देवता का गुणगान किया जाता है। इस स्तोत्र के द्वारा देवता का वन्दन करने से साधक के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं रह जाता। जपकर्त्ता के सभी विघ्न समाप्त हो जाते हैं। इसका पाठ चौराहे में आधी रात के समय करने से भैरव जी के दर्शन भी सुलभ हो जाते हैं।

श्री भैरव उवाच

ॐ देवि वक्ष्यामि ते स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।
मूलमन्त्रैकसर्वस्वं रक्षणीयं प्रयत्नतः॥
दीक्षाकाले च पूजायां जपान्ते च पठेच्छिवे।
विसर्जने तथा ह्वाने स दीक्षाफलमाप्नुयात्॥
अस्य श्रीमन्त्रराजस्य ऋषिर्भैरव ईश्वरि।
गायत्रं छन्दइत्युक्तं महामृत्युञ्जयः शिवे॥
देवता प्रणवो बीजं शक्तिः शक्तिः स्मृता शिवे।
हृदङ्गं कीलकमित्युक्तं सूर्यो दिग्बन्धनं तथा॥
भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोगः प्रकीर्तितः॥

अथ ध्यानम्

चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्थितमुखं पद्मद्वयान्तस्थितं।
मुद्रा-पाश-सुधाक्षसूत्र-विलसत् पाणीं हिमांशुप्रभम्॥
कोटीचन्द्रगलत् सुधाभ्भुततनुं हारादि-भूषोज्वलम्।
भ्रान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युंजयं भावये॥
पीयूषांशु-सुधामणिः करतले पीयूष-कुम्भं वहन्।
पीयूष-द्युतिसम्पुटान्तरगतः पीयूषधाराधरः॥
मां पीयूषमयूषसुन्दरवपुः पीयूष-लक्ष्मीसखा।
पीयूषद्रववर्षणत्वहरहः प्रीणातु मृत्युंजयः॥
देवं दिनेशाग्नि-शशङ्कनेत्रं, पीयूषपात्रं कलशं दधानम्।
दोर्भ्यांसुधांशुद्युतिमिन्द्रचूडं, नमामिमृत्युंजयमादिदेवम्॥

स्तोत्र प्रारम्भः

चन्द्रमण्डलमध्यस्थं रुद्रं भालेतिविस्तृते।
तत्रस्थं चिन्तयेत्साध्यं मृत्युप्राप्तोऽपिजीवति॥
मात्राद्यं मातृकामौलिं वेदकल्पतरोः फलम्।
यो जपेत् स भवेद् विश्ववैभवास्पदमीश्वरि॥
कूर्चं बीजं कूलाचार-विचार-कुशलः शिवः।
यो जपेत् तस्य वक्त्राब्जे नरीनर्ति हि भारती॥
देवेशाकाशबीजन्ते बिन्दुबिम्बेन्दुमण्डितम्।
चिन्तयेद् यो विभो चित्ते स शिवाद्वयतां लभेत्॥
हसांविसर्ग भृगुम्भर्ग सर्व-प्रलय-कारणम्।
निसर्गते भजेद् योन्तः लीयते स परे पदे॥
लक्ष्मीशब्दाक्षरं बिन्दुभूषणं यों जपेत् तव।
करे लक्ष्मी मुखे वाणी तस्य शम्भो रणे जयः॥
पालयेति युगं देव योजपेद्बीजसन्निधौ।
स सार्वभौमं साम्राज्यं भजेदन्ते स लोकताम्॥
शरदं वरदाम्वीरमाधवीं सविसर्गकाम्।
जपेद् यः शरदाम्भोंदधवलं तद् वशी भ्रमेत्॥
आकाशबीजं साकाशं जपेद् यः कुशसस्तरे।
स कौलिक शिरो-रत्न-रञ्जितांघ्रियुगो भवेत्॥
शङ्काबीजं सरेफस्कं शम्भो पद्मासने जपेत्।
कङ्कालमालाभरणे भविता भैरवोपमः॥
हृज्ञबीजं जगद् बीजं तेजो रूपं च यो जपेत्।
तस्मै दास्यसि भो शम्भो निजं धामसनातनम्॥

अकारं साकारं गिरिश तव मन्त्राञ्चलगतं।
जपेद् यो हृत् पद्मे निरूपमपरानन्दमुदितः॥
स साम्राज्यं भूमौ भजति रजनी-नायककला।
लसन्मौलिप्रान्ते व्रजति शिव-सायुज्यपदवीम्॥
बिन्दुभूषणत्रिकोणरसारस्वारणस्फुरदजारत्रिवृत्ते ।
भूगृहाद्यमिति चक्रमण्डले त्वां, निषस्ममुखसि स्मराम्यहम्॥
नाना विधानार्घ्य विभूषणाढ्यं, निः शेषपीयूषमयूषबिम्बे।
निषस्ममीशानमशेषशेषवाणीनुतं मृत्युहरं नमामि॥

फलश्रुति

इति स्तोत्रं दिव्यं सकलमनुराजैकनिकपं,
पठेद् यः पूजान्ते शिवशिवगृहे वार्चनविधौ।
रणे जित्वा वैरीन् भजति नृपलक्ष्मीं स्वमहसा,
भवेदन्ते वीरः सकलसुरसेव्यः शिवमयः॥
इतीदं परमं स्तोत्रं महामृत्युंजयप्रियः।
पठेद्वा पठयेन्नित्यं सर्वस्वं देवदुर्लभम्॥
अदेयं परमं तत्त्वे महापातकनाशनम्।
महामन्त्रमयं विद्या साधनेकरसायनम्॥
त्रैलोक्यसारभूतं च त्रैलोक्यामयदायकम्।
पठेन्निशीथे मन्त्री तु सद्यःसिद्धिर्भवेत् कलौ॥
चतुष्पथेऽर्धरात्रे तु ब्राह्मे वापि मुहूर्तके।
पठित्वा कौलिको देवि! भवेद् भैरवसन्निभः॥
इतीदं मम सर्वस्वं रहस्यं परमाद्भुतम्।
यस्य कस्य न द्रष्टव्यं इत्याज्ञापारमेश्वरी॥

महामृत्युञ्जय सहस्रनाम स्तोत्रम्

सहस्त्रनाम के पाठ में देवता के विभिन्न एक हजार नाम हुआ करते हैं। इस पाठ को करने से देवता अवश्य ही कृपा किया करते हैं। इसे शब्दशः पढ़ा जाता है।

आधी रात को पूर्ण सावधानी के साथ इसका पाठ करने से सिद्धि की प्राप्ति होती है। किसी निर्जन चौराहे या एकलिंग शिव के सम्पर्क में इसका पाठ करने से सिद्धि प्राप्त न हो, यह एक असम्भव बात है। प्राण संकट में हो तब इसे पढ़ने से संकट टल जाता है।

इस सहस्रनाम स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करने वाले की अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता तथा अन्य किसी भयंकर रोग से ग्रसित होने की सम्भावना नहीं रहती है।

भैरव उवाच

अधुना श्रृणु देवेशि सहस्राख्यं स्तवोत्तमम्।
महामृत्युञ्जयस्यास्य सारात्सारोत्तमोत्तमम्॥

विनियोगः

अस्य श्रीमृत्युञ्जयसहस्रनाममन्त्रस्य भैरवऋषिः उष्णिक छन्दः श्रीमहामृत्युञ्ज्ययो देवता ॐ बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

ध्यानम्

उद्यच्चन्द्रसमानदीप्तिममृतानन्दैकहेतुं शिवं।
ॐ जूंसः भुवनैकसृष्टिप्रलयोद्भूतैकरक्षाकरम्॥
श्रीमत्तारदशार्णमण्डिततनुं त्र्यक्षं द्विबाहुं परम्।
श्रीमृत्युञ्जयमीड्यविक्रमगुणैः पूर्णं हृदब्जे भजे॥

सहस्रनाम प्रारम्भः

ॐ जूंसः हौं महादेवो मन्त्रज्ञो मानदायकः।
मानी मनोरमाङ्गश्च मनस्वी मानवर्धनः॥
मायाकर्ता मल्लरूपी मल्लो मरान्तको मुनिः।
महेश्वरो महामान्यो मन्त्री मन्त्रजनप्रियः॥
मारुती मरुतां श्रेष्ठो मासिकः पक्षिको मृतः।
मातगंगो मात्तचित्तो मत्तचिन् मत्तभावनः॥
मानवेष्ठप्रदो मेशो मीनकीपतिवल्लभः।
मानकायो मधुस्तेयी मारयुक्तो जितेन्द्रियः॥
जयो विजयदो जेता जयेशो जयवल्लभः।
डामरेशो विरूपाक्षो विश्वभक्तो विभावसुः॥
विश्वेशो विश्वतातश्च विश्वसू विश्वनायकः।
विनीतो विनयी वादी वान्तदो वाग्भवो बटुः॥
स्थूलः सूक्ष्मश्चलो लोलो ललज्जिह्वाकरालकः।
विराध्येयो विरागीणो विलासी लास्यलालसः॥
लोलाक्षो ललधीर्धर्मी धनदो धनदार्चितः।
धनी ध्येयोऽप्यध्येयश्च धर्मो धर्ममयोदयः॥
दयावान् देवजनको देवसव्यो दयापतिः।

दुर्णिचक्षुदरीवासो दाम्भी देवदयात्मकः ॥
कुरूपः कीर्तिदः कान्तः क्लवः क्लीवात्मकः कुजः ।
बुधो विद्यामयः कामी कामकालान्धकान्तकः ॥
जीवो जीवप्रदः शुक्रः शुद्धः शर्मप्रदोऽनघः ।
शनैश्चरो वेगगतिर्वाचालोराहुरव्ययः ॥
केतु राकापतिः कालः सूर्योऽमतपराक्रमः ।
चन्द्रो भद्रप्रदो भास्वान् भाग्यदो भर्गरूपभृत् ॥
कूर्तो धूर्तो वियोगी च संगी गंगाधरो गजः ।
गजाननोप्रेयो गीतो ज्ञानी स्नानार्चनः प्रियः ॥
परमः पीवरांगश्च पार्वतीवल्लभो महान् ।
परात्मको विराट्वास्यो वानरोऽमितकर्मकृत् ॥
चिदानन्दी चारुरूपो गरुडो गरुडप्रियः ।
नन्दीश्वरो नयो नागो नागालङ्कारमण्डितः ॥
नागहारो महानागी गोधरो गोपतिस्तपः ।
त्रिलोचनः त्रिलोकेशः त्रिमूर्तिस्त्रिपुरान्तकः ॥
त्रिधामयो लोकमयो लोकैकव्यसनापहः ।
व्यसनी तोषितः शम्भुस्त्रिधारूपस्त्रिवर्णभाक् ॥
त्रिज्योतिस्त्रिपुरीनाथस्त्रिधाशान्तस्त्रिधागतिः ।
त्रिधागुणी विश्वकर्ता विश्वभर्ता त्रिपुरुषः ॥
उमेशो वासुकिर्वीरो वैनतेयो विचारकृत् ।
विवेकाक्षो विशालाक्षो विधिर्विधिरनुत्तमः ॥
विद्यानिधिः सरोजाक्षी निस्मरः स्मरशासनः ।
स्मृतिदः स्मृतिमान् स्मार्तो ब्रह्मा ब्रह्मविदाम्बरः ॥

ब्राह्मी व्रती ब्रह्मचारी चतुरश्चतुराननः।
चलाचलो चलगतिर्वेगी वीराधिपो परः॥
सर्ववासः सर्वगतिस्सर्वमान्यः सनातनः।
सर्वव्यापी सर्वरूपः सागरश्च समेश्वरः॥
समनेत्रः समद्युति समकायः सरोवरः।
सरस्वान् सत्यवाक् सत्यः सत्यरूपी सुधीः सुखी॥
स्वाराट् सत्यः सत्यवती रुद्रो रुद्रवपुर्वसुः।
वसुमान् वसुधानाथो वसुरूपा वसुप्रदः॥
ईशानः सर्वदेवानामीशानः सर्वबोधिनाम्।
ईशो वशेषो वयवी शेषशायी श्रीयः पतिः॥
इन्द्रश्चन्द्रवतंसी च चराचरजगत्पति।
स्थिरः स्थाणुरणुः पीनः पीनवक्षापरात्परः॥
पीनरूपो जटाधारी जटाजूटसमाकुलः।
पशुरूपः पशुपतिः पशुज्ञानी पयोनिधिः॥
वेद्यो वैद्योवेदमयो विधिज्ञो विधिमान् मृदुः।
शूली शुभङ्करःशोभ्यः शुभकर्ता शचीपतिः॥
शशाङ्कधवलः स्वामी वज्रीशङ्खी गदाधरः।
चतुर्भुजश्चाष्टभुजः सहस्रभुजमण्डितः॥
स्रुु वहस्तो दीर्घकेशो दीर्घो दम्भविवर्जितः।
देवो महोदधिर्दिव्यो दिव्यकीर्तिर्दिवाकरः॥
उग्ररूपश्चोग्रपतिरुग्रवक्षास्तपोमयः।
तपस्वी जटिलस्तापी तापहा तापवर्जितः॥
हरिद्धयो हयपतिर्हयदो हरिमण्डितः।

हरिवाही महोजस्को नित्यो नित्यात्मको नलः ॥
समानीसंसृतीस्त्यागी सङ्गी सन्निधिरव्ययः ।
विद्याधरो विमानी च वैमानीकवरप्रदः ॥
वाचस्पतिवमासारो वामाचारी बलन्धरः ।
वाग्भवो वासवो वायुर्वासनाबीजमण्डितः ॥
वाग्मी कौलश्रुतिर्दक्षो दक्षयज्ञविनाशनः ।
दक्षो दौर्भाग्यहा दैत्यमर्दनो भोगवर्धनः ॥
भोगी रोगहरो योगी हारी हरिविभूषणः ।
बहुरूपो बहुमति वङ्गवित्ती विचक्षणः ॥
नृतकृच्चित्तसन्तोषो नृत्यगीतविशारदः ।
शरदर्णविभूषाढ्यो गलदग्धोऽघनाशनः ॥
नागी नागमयोऽनन्तोऽनन्तरूपः पिनाकभृत् ।
नटलो नारकेशानो वरीयान् वविवर्णभृत ॥
साङ्करो टङ्कहस्तश्च पाशी शार्ङ्गी शशिप्रभः ।
सहस्ररूपी समगुः साधुनामभयप्रदः ॥
साधुवेव्यः साधुगतिः सेवाफलप्रदो विभुः ।
स्वमहो मध्यमो मत्तो मन्त्रमूर्तिः सुमन्तकः ॥
कीलालीलाकरो लूतो भवबन्धैकमोचनः ।
रेचिष्णुर्विच्युरतो मूतनो नूतनो नवः ॥
न्यग्रोधरूपो भयदो भयहारीतिधारणः ।
धरणीधरसेव्यश्च धराधरसुतापतिः ॥
धराधरोऽन्धकारिपुर्विज्ञानी मोहवर्जितः ।
स्थाणुः केशो जटी ग्राम्यो ग्रामारामो रमाप्रियः ॥

प्रियकृत् प्रियरूपश्च विप्रयोगी प्रतापनः।
प्रभाकरः प्रभादीप्तो मनुमान् मानवेश्वरः॥
तीक्ष्ण बाहुस्तीक्ष्णकरस्तीक्ष्णांशुस्तीक्ष्णलोचनः।
तीक्ष्णचित्तस्त्रयींरूपस्त्रयीमूर्तिस्त्रयीतनुः ॥
हविभुग् हविषां ज्योतिर्हालाहलो हलीपतिः।
हविश्मल्लोचनो हालामयो हरिणरूपभृत्॥
म्रदिमाम्रभयो वृक्षो हुताशो हुतभग् गुणी।
गुणज्ञो गरुड़ो गानतत्परो विक्रमी गुणी॥
क्रमेश्वर क्रमकरः क्रिमिकृत् क्लान्तमानसः।
महातेजो महामारी मोहितो मोहतल्लभः॥
मनस्वी त्रिदशोवालो वाल्यापतिरघापहः।
बाल्यो रिपुहरो हार्यो गविर्गविमतोगुणः॥
सगुणो वित्तराट गीयो विरोचनो विभावसुः।
मालामलो माधवश्च विकर्तनो विकत्थनः॥
मानकृत् मुक्तिदो गुल्यः साध्यः शत्रुभयङ्करः।
हिरण्यरेताशुभगः सतीनाथः सुरापतिः॥
मेढ्री मैनाकभगिनीपतिरुत्तमरूपभृत्।
अदित्यो दितिजेशानो दितिपुत्रः क्षयङ्करः॥
वासुदेवो महाभाग्यो विश्वावसुर्वप्रियः।
समुद्रोऽमिततेजश्च खगेन्द्रो विशिखी शिखी॥
गुरुत्मान् वज्रहस्तश्च पौलोमीनाथ ईश्वरः।
यज्ञिपेयो वाजपेयः शतक्रतुः शताननः॥
प्रतिष्टस्तीव्रविस्रम्भी गम्भीरो भाववर्धनः।

गायिष्टो मधुरालापो मधुमत्तश्च माधवः ॥
मायात्मा भोगिनां त्राता नाकिनामिष्टदायकः ।
नाकेन्द्रो जनको जन्यः स्तम्भनो रम्भनाशनः ॥
ईशान ईश्वरः ईशः शर्वरीपतिशेखरः ।
लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो वेदध्यक्षो विचारकः ॥
भव्योऽनर्घो नरेशानो नरकान्तकसेवितः ।
चतुरो भविता भावी विरामो रात्रिवल्लभः ॥
मंगलो धरणीपुत्रो धन्यो बुधिविवर्धनः ।
जयो जीवेश्वरो जारो जाठरो जह्नुतापनः ॥
जह्नुकन्याधरः कल्पो वत्सरो मास एव च ।
कतुर्ऋभुसुताध्यक्षो विहारी विहगापतिः ॥
शुक्लाम्बरो नीलण्ठः शुक्लभृगुसुतो भगः ।
शान्तः शिवप्रदो भव्यो भेदकृच्छान्तकृत्पतिः ॥
नाथो दातो भिक्षुरूपो धन्यश्रेष्ठो विशाम्पतिः ।
कुमारः क्रोधनः क्रोधी विरोधी विग्रहीरसः ॥
नीरसः सुरसः सिद्धो वृषणी वृषघातनः ।
पाञ्चास्यः षड्मुखश्चैव विमुखः सुमुखी प्रियः ॥
दुर्मुखो दुर्जयो दुःखी सुखी सुखविलासदः ।
पात्री पौत्री पवित्रच्श्र भूताक्ता पूतनान्तकः ॥
अक्षरं परमं तत्त्वं बलवान् बलघातनः ।
भल्ली मौलिभवाभावो भावाभावविमोचनः ॥
नारायणो युक्तकेशो दिग्देवो धर्मनायकः ।
कारामेक्षप्रदो जेयो महांगः सामगायनः ॥

उत्संगमोनामकारी चारी स्मरनिषूदनः।
कृष्णः कृष्णाम्बरः स्तुत्यस्तारावर्णस्त्रयाकुलः॥
त्रयामान्दुर्गतित्राता दुर्गमो दुर्गघातकः।
महानेत्रो महाधाता नानाशास्त्रविचक्षणः॥
महामूर्धा महादन्तो महाकर्णो महोरगः।
महाचक्षुर्महानाशो महाग्रीवो दिगालयः॥
दिग्वासो दितिजेशानो मुण्डी मुन्ड्राक्षासूत्रधृत्।
स्मशाननिलयो रागी महाकटिरनूतनः॥
पुराणपुरुषः पारम्परमात्मा महाकरः।
महालस्यो महाकेशो महेशो मोहनो विराट्॥
महासुखो महाजंघो मण्डली कुण्डली नटः।
असपत्न्यः पत्रकरः मत्रहस्तश्च पाटवः॥
लालसः सालसः सालः कल्पवृक्षश्च कल्पितः।
कल्पहा कल्पनाहारी महाकेतुः कठोरकः॥
अनलः पवनः पाठः पीठस्थः पीठरूपकः।
पाठीनः कुलशी पीनो मेरुधामा महागुणी॥
महातूणीरसंयुक्तो देवदानवदर्पहा।
अथर्वशेषः सौम्यास्य ऋक्सहस्रामितेक्षणः॥
यजुः साममुखो गुह्यो यजुर्वेदविचक्षणः।
याज्ञिको यज्ञरूपश्च यज्ञज्ञो धरणीपतिः॥
जंगमी भंगदी भासा दक्षा भिगमदर्शनः।
अगम्यः सुगमः खर्वः खेटी खेटाननो नयः॥
अमोद्यार्थः सिन्धुपतिः सैन्धवः सानुमध्यगः।

त्रिकालज्ञः सगणकः पुष्करस्थः परोपकृतः ॥
उपकर्तापकर्ता च घृणी रणभयप्रदः ।
धर्मो चर्माम्बरश्चाररूमश्चरुविभूषणः ॥
नक्तश्चरः कालवशी वशीवशिवो वशः ।
वश्यो वश्य-करो भस्मशायी भस्म-विलेपनः ॥
भस्मांगी मलिनांगश्च माला-मण्डित-मूर्धजः ।
गणकाग्रः कुलाचारः सर्वाचारः सखा समः ॥
मकारो गोत्रभिद् गोप्ता भीतरूपो भयानकः ।
अरुणश्चैक-वित्तश्च त्रिशंकु शंकु-धारणः ॥
आश्रयी ब्राह्मणो वज्री क्षत्रियः कार्य-हेतुकः ।
वैश्यः शूद्रः कपोतस्थ त्वारुष्टो रुषाकुलः ॥
रोगी रोगपहा शूरः कपिलः कपिनायकः ।
पिनाकी चाष्टमूर्तिश्च क्षितिमान् धृतिमांस्तथा ॥
जलमूर्तिर्वायुमूर्तिः गताशः सोममूर्तिमान् ।
सूर्यदेवो यजमान आकाशः परमेश्वरः ॥
भवहा भवमूर्तिश्च भूतात्मा भूतभावनः ।
भवः सर्वस्तथारुद्रः पशुनाथश्च शंकर ॥
गिरिजो गिरिजानाथो गिरेन्द्रश्च महेश्वरः ।
भीम ईशान भीतिज्ञः खण्डपश्चण्डविक्रमः ॥
खण्डभृत् खण्डपशुः कृत्तिवासो वृषापहः ।
कंकाल कलनाकारः श्रीकण्ठो नीललोहितः ॥
गुणीश्वरो गुणी नन्दी धर्म्मराजो दुरन्तकः ।
श्रृंगरीटी रसासारी दयालु रूपमण्डितः ॥

अमृतः कालरुद्रश्च कालाग्निः शशिशेखरः।
त्रिपुरान्तक ईशानस्त्रिनेत्रः पञ्चवक्त्रकः॥
कालहृत् केवलात्मा च ऋग्यजुः सामवेदवान्।
ईशानः सर्वभूतानामीश्वरः सर्व-रक्षसाम्॥
ब्रह्मणाधिपतिर्ब्रह्म ब्रह्मणोधिपतिस्तथा।
ब्रह्मा शिवः सदानन्दी सदानन्दः सदाशिवः॥
मेषस्वरूपश्चार्वांगे गायत्री-रूप-धारणः।
अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतराय च॥
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपिणे।
वामदेवस्था ज्येष्ठः श्रेष्ठः कालकरालकः॥
महाकालो भैरवेशो वेशी कालविकारणः।
बलविकारणो बालो बलप्रमथनस्तथा॥
सर्व-भूतादि-दमनो देवो-देवो मनोन्मनः।
सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः॥
भवे भवेराधिभवे भजस्व मां भवोद्भवः।
भवनो भावनो भाव्यो बलकारी परंपदम्॥
परः शिवः परो ध्येयः परं ज्ञानं परात्परः।
पदावरः पलाशी च मांसाशी वैष्णवोत्तमः॥
ओं ऐं श्रीं ह् सौं देवः ओं ह्लीं हैं भैरवोत्तमः।
ओं ह्लां नमः शिवायेति मन्त्रो वटुर्वरायुधः॥
ओं ह्लौं सदा शिवः ओं ह्लीं आपदुद्धारणोमतः।
ओं ह्लीं महाकरालास्य ओं ह्लीं वटुकभैरवः॥
भगवांस्त्र्यम्बक ओं ह्लीं चन्द्रार्धशेखरः।

ओं ह्रीं सं जटिलो धूम्र ओं ऐं त्रिपुरघातकः।।
ह्रां ह्रीं ह्रं हरिवामांग ओं ह्री ह्रं ह्री त्रिलोचनः।
ओं वेदरूपो वेदज्ञ ऋग्यजुः सामरूपवान्।।
रुद्रो घोररवो घोर ओं क्ष्म् ह्रं अघोरकः।
ओं जूं सः पीयूषसक्तोमृताध्यक्षो मृतालसः।।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धी पुष्टिवर्धनम्।
उर्व्वारूकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ।।
ॐ ह्रों जूं सः ओं भूर्भवः स्वः ॐ जूं सः मृत्युञ्जयः।

फलश्रुति

इदं नाम्नां सहस्रं तु रहस्यं परमं पदम्।।
सर्वस्वं नाकिनां देवि! जन्तूनां भुवि का कथा।
तव भक्त्या माया ख्यातं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।।
गोप्यं सहस्रनामेदं साक्षादमृतरूपिणम्।
यः पठेत् पाठयेद्वापि श्रावयेच्छृणुयात् तथा।।
मृत्युञ्जयस्य देवस्य फलं तस्य शिवे! शृणु।
लक्ष्म्या कृष्णो धियाजीवः प्रतापेन दिवाकरः।।
तेजसा वह्निदेवस्तु कवित्ते चैव भार्गवः।
शौर्येण हरिशंकाशो नीत्या द्रुहिणिसन्निभः।।
ईश्वरत्वेन देवेशि मत्सतः किमतः परम्।
यः पठेदर्धरात्रे च साधको धीर संयुतः।।
पठेत् चैकलिंगे मेरुदेशे वने जने।।
स्मशाने प्रान्तरे दुर्गे पाठात् सिर्द्धिर्न संशयः।
नौकायां चौरसंगे च संकटे प्राणसङ्क्षये।।

यत्र यत्र भये प्राप्त विषवह्निभयादिषु।
पठेत् सहस्रनामाशु मुच्यते नात्र संशयः॥
भौमावस्यां निशीथे च गत्वा प्रेतालपं सुधीः।
पठित्वा स भवेद् देवि साक्षादिन्द्रोऽर्चितः सुरैः॥
शनौ दर्शदिने देवि! निशायां सरितस्तटे।
पठेन्नामसहस्रं वे जपेदष्टोत्तरं शतम्॥
सुदर्शनो भवेदासु मृत्युञ्जयप्रसादतः।
दिगम्बरो मुक्तकेशः साधको दशधा पठेत्॥
इह लोके भवेद्राजा परे मुक्तिर्भविष्यति।
इदं रहस्यं परमं भक्त्या तव मयोदितम्॥
मन्त्रगर्भ मनुमयं न चाख्येयं दुरात्मने।
नो दद्यात्परशिष्येभ्यः पुत्रेभ्योऽपि विशेषतः॥
रहस्यं मम सर्वस्वं गोप्यं गुप्ततरं कलौ।
षणमुखस्यापि नोक्तव्यं गोपनीयं तथात्मनः॥
दुर्जनाद्रक्षणीयं च पठनीयमहर्निसम्।
श्रोतव्यं साधकमुखाद्रक्षणीयं स्वपुत्रवत्॥

॥ इति श्री रूद्रयामलतन्त्रे महामृत्युंजय सहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तम्॥

महामृत्युञ्जय स्तुति

स्तोत्र की ही भाँति स्तुति का गायन किया जाता है। इस स्तुति के जप से आई हुई मृत्यु भी जप के समाप्त होने तक ठहर जाती है। इसके जपने से अकाल मृत्यु के कारण भी समाप्त हो जाते हैं अर्थात् साधक पूर्णायु हो जाता है। इसके पाठ से स्वप्न के अशुभ फल भी शुभ फलों के दाता हो जाते हैं। अपकर्त्ता के ऊपर किया गया कोई भी मारण प्रयोग सफल नहीं हो पाता। इस स्तुति को पंचमी, दशमी तथा पूर्णिता के दिन पढ़ने से रोगादि का अन्त हो जाता है।

नन्दिकेश्वर उवाचः

कैलासस्योत्तरे श्रृंगे शुद्धस्फटिकसन्निभे।
तमोगुणविहीने तु जरामृत्युविवर्जिते॥
सवार्थसम्पदाधारे सर्वज्ञानकृतालये।
कृताजंलिपुठो ब्रह्मा ध्यानासीनं सदाशिवम्॥
पप्रच्छप्रणतो भूत्वा जानुभ्यामवनिं गतः।
सर्वार्थसम्पदाधार ब्रह्मलोक-पितामहः॥

ब्रह्मोवाचः

केनोपायेन देवेश चिरायुर्लोमशोऽभवेत्।
तन्मे ब्रूहि महेशान लोकानां हितकाम्यया॥

श्री सदाशिव उवाचः

शृणु ब्रह्मन् प्रवक्ष्यामि चिरायुर्मुनिसत्तमः।
संजातः कर्मणा येन व्याधिमृत्युविवर्जितः॥
तस्मिन्नेकार्णवे घोरे सलिलौघ-परिप्लुते।
कृतान्तभयनाशायस्तुतोमृत्युंजयः शिवः॥
तस्य संकीर्तनान्नित्यं मुनिर्मृत्युविवर्जितः।
तमेवकीर्तयन्ब्रह्मन्मृत्युं जेतुं न संशयः॥

लोमश उवाचः

ॐ देवाधिदेव! देवेश! सर्वप्राणभृताम्बर।
प्राणीनामपिनाथस्तवं मृत्युंजय नमोस्तु ते॥
देहिनां जीवभूतोऽसि जीवोजीवस्य कारणम्।
जगतां रक्षकस्त्वं वै मृत्युंजय नमोस्तु ते॥
हेमाद्रिशिखराकार सुधावीचिमनो हरे।
पुण्डरीकपरं ज्योतिर्मृत्युंजय नमोस्तु ते॥
ध्यानाधारमहाज्ञान सर्वज्ञानैककारण।
परित्राणासि लोकानां मृत्युंजय नमोस्तु ते॥
निहता येन कालेन स देवासुरमानुषाः।
गन्धर्वाप्सरसश्चैव सिद्धविद्याधरास्तथा॥
साध्याश्च वशवो रुद्रास्तथाश्विनिसुतावुभौ।
मरुवश्च दिशो नागाः स्थावरा जंगमास्तथा॥
जितः सोऽपि त्वया ध्यानात्मृत्युंजय नमोऽस्तु ते।
ये ध्यायन्ति परां मूर्तिम्पूजयन्त्यमरादयः॥
न ते मृत्युवशं यान्ति मृत्युंजय नमोऽस्तु ते।

त्वमोगांरोऽसि वेदानां देवानां च सदा शिवः ॥
आधारशक्तिः शक्तीनां मृत्युंजय नमोऽस्तु ते।
स्थावरे जंगमे वापि यावत्तिष्ठति देहिगः ॥
जीवत्यपत्यलोकोऽयं मृत्युंजय नमोऽस्तु ते।
सोमसूर्याग्निमध्यस्थव्योमव्यापिन् सदाशिवः ॥
कालत्रय महाकाल मृत्युंजय नमोऽस्तु ते।
प्रबुद्धे चाप्रबुद्धे च त्वमेव सृजसे जगत् ॥
सृष्टिरूपेण देवेश मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते।
व्योम्नि त्वं व्योमरूपोऽसि तेजः सर्वत्र तेजसि ॥
ज्ञानिनां ज्ञानरूपोऽसि मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते।
जगज्जीवो जगत्प्राणः स्रष्टा त्वं जगतः प्रभुः ॥
कारणं सर्वतीर्थानां मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते।
नेतात्वमिन्द्रियाणां च सर्वज्ञानप्रबोधकः ॥
सांख्ययोगश्च हंसश्च मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते।
रूपातीतः स्वरूपश्च पिण्डस्थपदमेव च ॥
चतुर्लोककलाधार मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते।
रेचके वह्निरूपोऽसि सोमरूपोऽसि पूरके ॥
कुम्भके शिवरूपोऽसि मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते।
क्षयं करोषि पापानां पुण्यानामपिवर्धनम् ॥
हेतुस्त्वं श्रेयसां नित्यं मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते।
सर्वमायाकलातीते सर्वेन्द्रियपरारवर ॥
सर्वेन्द्रियकलाधीश मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते।
रूपगन्धो रसस्पर्शः शब्दः साकार एव च ॥

त्वत्तः प्रकाश एतेषां मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते।
चतुर्विधानां सृष्टीनां हेतुस्त्वं कारणेश्वर॥
भावाभावपरिच्छिन्न मृत्युंजय नमोऽस्तु ते।
त्वमेको निष्कलो लोके सकलं भुवनत्रयम्॥
अतिसूक्ष्मातिरूपस्त्वं मृत्युंजय नमोऽस्तु ते।
त्वं प्रबोधस्त्वमाधारस्त्वद्बीजं भुवनत्रयम्॥
सत्त्वं रजस्तमस्त्वं हि मृत्युंजय नमोऽस्तु ते।
त्वं सोमस्त्वं दिनेशश्च त्वमात्मा प्रकृतेः परः॥
अष्टात्रिंशत् कलानाथ मृत्युंजय नमोऽस्तु ते।
सर्वेन्द्रियाणमाधारः सर्वभूतगुणाश्रयः॥
सर्वज्ञानमयानन्त मृत्युंजय नमोऽतु ते।
त्वमात्मा सर्वभूतानां गणानां त्वमधीश्वरः॥
सर्वानन्दमयाधार मृत्युंजय नमोऽस्तु ते।
त्वं यज्ञः सर्वयज्ञानां त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा॥
शब्दाब्रह्मत्वमोङ्कार मृत्युंजय नमोऽस्तु ते।

श्री सदाशिव उवाचः

एवं सङ्कीर्तयेत् यस्तु शुचिस्तद्गतमानसः।
भक्त्याश्रृणोति यो ब्रह्मन्न स मृत्युवशो भवेत्॥
न च मृत्युभयं तस्य प्राप्तकालं च लङ्घयेत्।
अपमृत्युभयं तस्य प्रणश्यति न संशयः॥
व्याधयो नोपपद्यन्ते नोपसर्गभयं भवेत्।
प्रत्यासन्नतरे काले शतैकावर्तने कृते॥
मृत्युर्न जायते तस्य रोगान्मुंचति निश्चितम्।

पंचम्यां वा दशम्यां वा पौर्णिमास्यामथाऽपि वा ॥
शतमावर्तते यस्तु शतवर्ष स जीवति।
तेजस्वी बलसम्पन्नो लभते शिवमुत्तमम् ॥
त्रिविधं नाशयेत् पापं मनोवाक् कायसम्भवम्।
अभिचारणि कर्माणि कर्म्माण्याथर्वणानि च॥
क्षीयन्ते नात्र सन्देहो दुःस्वप्नश्च विनश्यति।
इदं रहस्यं परमं देवदेवस्य शूलिनः॥
दुःस्वप्ननाशनं पुण्यं सर्वविघ्नविनाशनम्।

॥ इति श्री ब्रह्मा-शिव सम्वादे महामृत्युंजय स्तुति समाप्तम् ॥

श्री रुद्राष्टक

नमामीशमीशान निर्वाण रूपम्,
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम्।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहम्,
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।
निराकारओंकारमूलं तुरीयम्,
गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकाल, कालं कृपालम्,
गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गम्भीरम्,
मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम्।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगंगा,
लसद्भाल बालेन्दु कण्ठे भुजंगा।
चलत्कुण्डलम् शुभ्रनेत्रं विशालम्,
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालम्,
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।

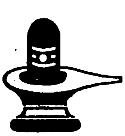
प्रचण्डं प्रकष्टं प्रगल्भं परेशम्,
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणि,
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी,
सदा सच्चिदानन्द दाता पुरारी।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी,
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दम्,
भजंतीहु लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशम्,
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।
न जानामि योगं जपंनैव पूजाम्,
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भू तुभ्यम्।
जरा जन्म दुःखौघतातप्यमानम्,
प्रभौ पाहि आपन्नमामीश शम्भो।
रुद्रष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये,
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदती।



श्री शिव पंचाक्षर स्तोत्र

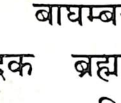
नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥
मन्दाकिनी सलिल चन्दनचर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दार पुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥
शिवाय गौरी वदजाब्ज वृन्द सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय।
श्री नीलकण्ठाय वृष ध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥
वशिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमार्य मुनीन्द्र देवर्चचित शेखराय।
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय तस्मै 'व' कराय नमः शिवाय॥
यक्ष स्वरूपाय जटाधराय पिनाक हस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥
पंचाक्षरमिंद पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सहमोदते॥

ॐ ह्रौ जूं सः भूर्भवः स्वः
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्
ॐ भूर्भवः स्वः जूं ह्रौ ॐ॥



आरती श्री शिव जी की

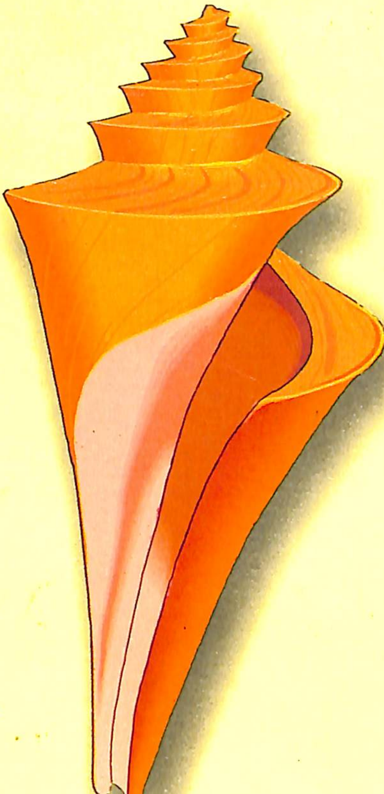
जय शिव ओंकारा, भज हर शिव ओंकारा,
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धाङ्गी धारा।
एकानन चतुरानन पंचानन राजै,
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै।
दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहै,
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन मन मोहे।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी,
चंदन मृगमद चंदा सोहै त्रिपुरारी।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे,
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।
करके मध्ये कमंडलु चक्र त्रिशूलधारी,
सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका,
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका।
त्रिगुण शिव जी की आरती जो कोई नर गावे,
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे।



रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार-२४९४०१

महा मृत्युञ्जय मन्त्र

ॐ हौं जूं सः भूर्भुव स्वः
ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धानान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात॥



रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार